ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

जुलाई–२०१४

जुलाई–२०१४ ◆ वर्ष ३ ◆ अंक ८ ◆ उदयपुर

कर पुकार मैं कहता हूँ
सुन लो मेरी बात
सत्यार्थ–शिक्षा अपना लो
सारी मानव जात

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ३१

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
आषाढ शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

July- 2014

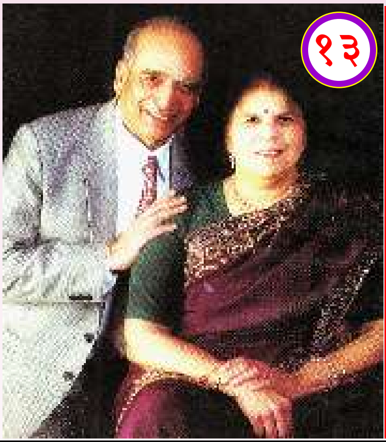

१३ डॉ. सुखदेव सोनी एक सुरभित पुष्प

२३ संक्रमण काल के दौर में युवा

समाचार २७

हलचल २८

०४	वेद सुधा
०६	एक ये भी खुदाई है
०८	चिन्ता चिता समान है
०९	सत्यार्थप्रकाश पहेली-६
१०	वेद और ऋषि ग्रन्थ
१२	दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम
१७	शतशः नमन हे! तत्त्वबोध
१८	शठे शाठ्यं समाचरेत्
२०	विद्या और अविद्या
२१	रामकथा के कुछ विवादस्पद प्रसंग
२६	ट्री सिस्टर्स
२६	विवाह के प्रकार

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - २

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मन का खूँटा

वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न सन्दितम्। गीर्भिर्वरुण सीमहि।। - ऋगवेद १/२५/३

अर्थ-(वरुण) हे वरुण भगवन्! (न) जैसे (रथीः) रथ चलाने वाला (सन्दितम्) थककर चूर हुए (अश्वम्) घोड़े को (विश्राम के लिए खूंट से बांध देता है) वैसे ही (मनः) (भटक भटककर थके हुए) अपने मन को (मृळीकाय) सुख प्राप्त करने के लिए (गीर्भिः) अपनी भक्ति भरी वाणियों से (ते) तेरे साथ(विसीमहि) हम बाँध लेते हैं।

चल चलकर थके हुए घोड़े को विश्राम की आवश्यकता होती है। समझदार सारथि इस बात को जानता है, इसलिए जब वह देखता है कि अब उसका घोड़ा चलकर टूट चुका है, चूर हो चुका है तब वह उसे लाकर खूँट से बाँध देता है। उसे पानी पिलाता है, हरी-हरी और रसीली घास खिलाता है और इस प्रकार उसकी सारी थकावट और चूर दूर करके उसे अगले दिन फिर रथ में चलने के लिए नया बना लेता है।

हम भी इस संसार की प्रतिदिन यात्रा में चलते चलते थक जाते हैं। जीवन यात्रा के लिए हमें प्रतिदिन जिन अनेक प्रकार के संघर्षों में से गुजरना पड़ता है, वे हमें तोड़ डालते हैं, चूर-चूर कर देते हैं। इस प्रकार चूर हुआ हमारा मन घबरा उठता है। उसे निराशा और हतोत्साहता आ दबाती हैं। उसकी प्रसन्नता और हँसी जाती रहती है। वह गहरी उदासी और भविष्य के प्रति अन्धकारमयी आशाहीनता का स्थान बन जाता है। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। अनेक लोगों के मनों की तो यह अवस्था हो जाती है कि वे जीवन को ही सहन नहीं कर सकते- आत्महत्या कर लेते हैं। इस प्रकार भटक भटककर चूर चूर और निराश हुए मनरूपी अश्व को विश्राम देने वाला खूँटा भगवान् हैं। भगवान के खूँटे से हमारे मन के घोड़े को बाँधनेवाली रज्जु प्रभु-भक्ति से भरी हमारी वाणियाँ हैं। जब हम प्रेम में तन्मय होकर भक्ति-गद्गद कण्ठ से प्रभु के गुणों का गान करते हैं, तब हमारा मन प्रभु के साथ बँध जाता है- उनमें जाकर टिक जाता है। उस समय हमारे मन की जो अवस्था होती है वह अद्भुत है। उस समय प्रेमावरुद्ध कण्ठ से गाई हुई प्रभु की महिमा और उनके गुणों का विचार-पूर्ण चिन्तन एवं उनकी करुणा वृष्टियों का कृतज्ञतापूर्ण स्मरण तथा उनसे विनम्र होकर की हुई शक्ति की प्रार्थना हमारे मन में एक अवर्णनीय शान्ति प्रसाद सन्तोष, उत्साह, आशा, निर्भयता, भरोसे और निष्काम कर्मशीलता की अवस्था उत्पन्न कर देती है। यह अवस्था आ जाने के पश्चात् हम जीवन-संघर्ष से घबराते नहीं-उससे डरकर भागते नहीं। हममें उसका मुकाबला करने और उस पर विजय पाने की उमंग भर जाती है। संसार यात्रा में चलने के लिए हममें फिर से नव जीवन का संचार हो जाता है। इस प्रकार प्रभु के खूँटे पर बँधकर पिया हुआ पानी और खाई हुई घास हमारे थके हुए निष्प्राण से, मनरूपी घोड़े को फिर से दौड़ने के लिए ताजा बना देते हैं।

मन के घोड़े से दी हुई उपमा में एक रहस्य है। जिस प्रकार घोड़ा शक्ति से भरा होता है उसी प्रकार हमारा मन भी शक्ति का भंडार है। यदि सारथि घोड़े को वश में रखे और सुमार्ग में चलाए, तो वह मनों भार रथ में लादकर ले जा सकता है और अपने ठिकाने पर पहुँच सकता है, परन्तु यदि घोड़ा वश में न हो और उसे सुमार्ग में न चलाया जाए तो वह सारथि को गड्ढे में गिराकर मार देगा। इसी प्रकार यदि हम अपने मन को वश में रखें और उसे सुमार्ग पर चलाएँ तो हम उससे भाँति-भाँति के

अपने और पर उपकार के कार्य कर सकते हैं और जीवन की समाप्ति पर जीवन के अन्तिम ठिकाने मोक्षधाम में पहुँच सकते हैं, परन्तु मन हमारे वश में न हो और उसे सुमार्ग पर न चलाया जाए तो वह हमें पाप के गड्ढे में गिराकर खराब कर देगा।
'सन्दितम्' शब्द का मूल अर्थ है- खंडित, अर्थात् टूटा-फूटा हुआ। अश्व के संबंध में इसका अभिप्राय 'थककर चूर हुआ' ऐसा है। यह हम ऊपर देख चुके हैं। 'सीमहि' क्रिया का अर्थ 'हम बाँधते हैं' ऐसा किया गया है। यह पद 'षिञ् बन्धने' धातु का रूप है और मंत्र में प्रधानरूप में इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है परन्तु पद 'षिवु तन्तुसन्ताने' धातु से भी बन सकता है तब उसका अर्थ होगा 'हम सींते हैं' इसलिए 'सन्दितम्' और 'सीमहि' पद 'हम फटे हुए को सींते हैं' ऐसे अर्थ की झलक भी दे सकते हैं। इन दोनों पदों के इस अर्थ की झलक से भी एक बड़े सुन्दर भाव की प्रतीति होती है। यदि किसी का कोई वस्त्र फट गया हो तो वह उसे धागे से सींकर ठीक कर लेता है और वह वस्त्र एक प्रकार से फिर नया बन जाता है। इसी भाँति यदि हमारा मन हमारे पापाचरणों से खंडित हो गया हो, जर्जरित हो गया हो, काम न कर रहा हो तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु की शरण में आओ। उसकी भक्ति करो। प्रभु के भक्तिरूप धागों से सिलकर हमारा मन फिर से नया और काम का हो जायेगा।
हे मेरे आत्मन्! यदि तू सुख चाहता है तो अपने मन के घोड़े को भक्ति की रस्सी से प्रभु के खूँटे से बाँधने का अभ्यास कर।

- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति
(साभार- वरुण की नौका)

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

आनन्द, दीर्घायु और
अक्षय कीर्ति के आधार।
सच्चाई, सज्जनता,
सत्कर्म और परोपकार ॥
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

एक ये भी खुदाई है

कुछ माह पूर्व उत्तर प्रदेश में एक ऐसी खुदाई हुई जिसको लेकर, जिसमें जरा सी बुद्धि शेष थी, हर ऐसे भारतीय का सिर शर्म से झुक गया। इस घटना पर हम तभी लिखना चाहते थे, पर यह हो न सका। अभी फिर कुछ दिन पूर्व एक ऐतिहासिक खुदाई हुई जिसने भारत माँ की अस्मिता की सुरक्षा हेतु न्यौछावर होने वाले जियाले सपूतों का रक्तरंजित इतिहास हमारे सामने उपस्थित कर दिया, पर जिसकी विशेष चर्चा भी नहीं हुई। अब दो खुदाईयाँ हमारे सामने थीं- एक हमारी मूखर्ता, अन्धविश्वास की पराकाष्ठा की प्रतीक, तो दूसरी भारतीयों के त्याग और बलिदान की।

थोड़ी-सी चर्चा मूखर्ता की भी हो जाय। एक बाबा हैं शोभन सरकार। उनके बारे में जितने मुँह उतनी बातें। एक दिन उनको स्वप्न दिखा कि डोंडियाखेड़ा, उन्नाव, उत्तर प्रदेश के किले के नीचे १००० टन सोना दबा है। उन्होंने भारत सरकार को चिट्ठी लिखी कि इस खजाने को खोजा जावे। उन्होंने यहाँ तक दावा किया कि अगर उनकी बात सच न निकले तो वे जुर्माना भरने को तैयार हैं। वस्तुतः इस खजाने को १८५७ की क्रान्ति में शहीद हुए राव रामबक्श सिंह का खजाना बताया गया। उधर इतिहासविदों का कहना था कि रामबक्श इतने अमीर थे ही नहीं। खैर! यह सब भारत के लिए कुछ नया नहीं है। पर आश्चर्य तब हुआ कि भारत सरकार मूर्खता के इस खेल में शामिल हो गई। केन्द्रीय मंत्री श्री चरणदास महन्त के निर्देशन पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने बाकायदा तैयारी कर ली। राष्ट्रीय चैनलों पर यह खुदाई उन दिनों एक प्रमुख खबर बन गई। 'पीपली लाइव' की तरह वहाँ मेला लग गया। दुकानें सज गईं। तकनीकी विकास के इस युग में सारी दुनिया इस मूर्खता को देख रही थी। एक राष्ट्रीय सरकार २१वीं सदी में, सपने में देखे खजाने को निकालने जा रही थी। प्रारम्भ में कुछ नेताओं, यहाँ

डोडियाखेड़ा-खुदाई

तक कि श्री मोदी जी, सिंघल जी ने भी इस कार्यवाही की निन्दा की पर बाद में वे भी चुप हो गए। शायद उन्हें इस अन्धविश्वास का विरोध धर्म का विरोध लगा होगा।

आखिर खुदाई शुरू हुई। उन्नाव के डी.एम. विजयकरण आनन्द और एस.पी श्रीमती सोनिया सिंह ने खुदाई के लिए पहला फावड़ा चलाया। परन्तु इस फावड़े की फाल कभी भी तथाकथित खजाने से नहीं टकराई। इस तरह यह तलाश खत्म हुई। हाँ कैमरों में यह तमाशा सदैव के लिए कैद हो गया। एक बात और मजेदार हुई। एक कहावत है कि 'पंगत बिछी नहीं, मंगते आ गए' खजाना तो जब निकलना था तब निकलना था पर उस पर लोगों की दावेदारी प्रारम्भ हो गई। ऐसा लग रहा था कि खजाना सामने था और लोग अपना हिस्सा माँग रहे हैं। ये बाबा अब एक और जगह खजाना बता रहे हैं (रीवाँ नरेश के किले में शिव चबूतरे के पास) जहाँ २५०० टन सोना गढ़ा है। पर अब भारत सरकार की पुनः जग हँसाई की हिम्मत नहीं हुई।

जिस खुदाई से उक्त खुदाई का हमें स्मरण हुआ उसका वर्णन अब करते हैं जिसने १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की रक्तरंजित गाथा, ब्रिटिश हुकूमत की क्रूरता तथा अतीत के जलियावालाँ बाग को हमारे सामने उपस्थित कर दिया। अतीत के पन्नों को पलटें तो इस क्रूर घटना के बारे में स्वयं अपनी पीठ थपथपाते हुए क्रूर जल्लाद फ्रेडरिक हेनरी कूपर ने इस भयानक

नरसंहार का वर्णन अपनी किताब "The Crisis in the punjab from May 10 until the fall of Delhi" में किया है। १८८३ और १६४७ के बीच में प्रकाशित अमृतसर जिला गजट में भी 'कालियावाला खूँ' का वर्णन बताया जाता है। इस बीभत्स नरसंहार की निन्दा १८५६ में ब्रिटेन के 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में चार्ल्स गिपलिन ने भी की थी। परन्तु ब्रिटिश सरकार द्वारा अधिकृत खेद प्रकाशित नहीं किया गया। इतिहासकार सुरिन्दर कोचर ने कालियावाला खूँ के सच को सामने लाने हेतु अथक प्रयास किए परन्तु किसी अधिकारी से सहयोग न मिलने पर भी वे निराश नहीं हुए।

इस देश की सरकार और अफसरशाही की असंवेदनशीलता तथा मूर्खता की कल्पना कीजिए, जहाँ एक स्वप्न के आधार पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा अधिकृत तौर पर खुदाई करवायी गई, वहीं कालियावाला खूँ के रक्तरंजित इतिहास को उजागर करने वाली खुदाई हेतु प्रार्थना पत्र प्रधानमंत्री से लेकर पुरातत्व विभाग तक की यात्रा करते रहे पर किसी के कान पर जूँ भी नहीं रेंगी। पंजाब के अजनाला में स्थानीय गुरुद्वारा प्रबन्धन समिति तथा इतिहासकार सुरिन्दर कोचर की प्रेरणा व प्रयास से १ मार्च २०१४ को कालियावाला खूँ के नाम से प्रसिद्ध एक कुएँ की खुदाई की गई। जिसमें ५० इन्सानी खोपड़ी, १७० जबड़े, ५००० दाँत कुछ स्वर्णाभूषण तथा ब्रिटिश काल के कुछ सिक्के मिले। जो कर्नल जेम्स स्मिथ नील तथा अमृतसर के तत्कालीन उपायुक्त फ्रेडरिक हेनरी कूपर की क्रूरता का साक्षात् गान कर रहे थे।

इतिहास विशेषज्ञों के अनुसार १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सिपाहियों के द्वारा विद्रोह का परचम फहराया गया तो सभी भारतीय सिपाहियों पर अंग्रेज सन्देह करने लगे। मियाँमीर स्थित बंगाल नेटिव इन्फेन्टरी की २६वीं बटालियन के शस्त्र भी रखवा दिए। ३० जुलाई १८५७ को प्रकाश पाण्डे की अगुवाई में सैनिकों ने दो ब्रिटिश अफसरों को मार दिया तथा रीवाँ नदी पार कर अजनाला की ओर जा निकले जहाँ उन्हें कैद कर लिया गया। उनमें से अनेक दम घुटने से मर गए तथा २८२ को हाथ बाँधकर निहत्थों को बेरहमी से मारकर कुएँ में दफन कर दिया। जहाँ अब तक गुमनामी के अन्धेरे में दबे रहे। यहाँ हम गुरुद्वारा के अधिकारियों की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस ऐतिहासिक कार्य हेतु गुरुद्वारा Shift करने की मंजूरी दी।

सुरिन्दर कोचर के अनुसार सरकार व एएसआई के रुचि न लेने के कारण यह खुदाई वैज्ञानिक तरीके से न होने से कई महत्वपूर्ण तथ्य नष्ट हो गए। कितना अभागा है यह देश कि सपने के आधार पर सोने की खोज सरकार करती है और हमारे इलेक्ट्रोनिक चैनल इसका लाइव प्रसारण करते हैं परन्तु हमारे इतिहास के देशभक्ति से ओतप्रोत पन्नों को सामने लाने में न तो सरकार रुचि लेती है और मीडिया को भी उतनी रुचि नहीं।

अब आशा की जा सकती है कि अजनाला की धरती पर इन देशभक्तों की कुर्बानी की याद में कम से कम स्मारक तो निर्मित कराया ही जावेगा ताकि यह तो कहा ही जा सके-

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

१८५७ के प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य समर के अनेक गुमनाम शहीदों को बारम्बार नमन।

- अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

चिन्ता चिता समान है

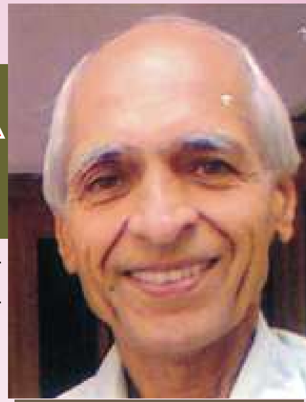

प्रो. शामलाल कौशल

मनुष्य का जीवन ही चिन्ता से शुरू होता है। उसके पैदा होते समय माँ-बाप को चिन्ता होती है कि बच्चा ठीक-ठाक पैदा होगा या नहीं, उसके पैदा होते समय उसकी जननी ठीक-ठाक रहेगी या नहीं, लड़का होगा या लड़की, जो भी पैदा हुआ ठीक-ठाक रहेगा या नहीं, उसे कोई तकलीफ तो नहीं हो जायेगी। इस तरह पैदायश के समय से ही मनुष्य का सम्बन्ध चिन्ता से जुड़ा हुआ है जो कि मौत तक उसका पीछा नहीं छोड़ती। माता पिता को बच्चों को स्कूल में दाखिल कराने की, अच्छे नम्बरों में पास होने की चिन्ता होती है। बच्चे को भी स्कूल में अपने सहयोगियों के साथ खेलने की इतनी खुशी नहीं होती जितनी कि नियमित तौर पर होमवर्क करके विभिन्न परीक्षाओं में ऊँचे अंकों में पास होने की चिन्ता होती है। बड़े होकर अच्छा रोजगार प्राप्त करने, विवाह शादी तथा सफल पारिवारिक जीवन की चिन्ता होती है।

आज प्रत्येक आदमी किसी न किसी चिन्ता में फँसा हुआ है। किसी को अधिक धन कमाकर गरीबी दूर करने की चिन्ता है। किसी को अपने व्यापार/उद्योग/नौकरी में

तरक्की करने की चिन्ता है। किसी को यह चिन्ता है कि उसके व्यवसाय से सम्बन्धित उसके सहयोगियों के साथ पटती क्यों नहीं। अधिकांश घरों में पति-पत्नी की आपस में पटड़ी नहीं बैठती। दोनों को इस बात की चिन्ता होती है कि कोई तीसरा उनके जीवन में घुसपैठ तो नहीं कर रहा। माँ बाप को इस बात की चिन्ता होती है कि उनके बच्चे लायक, ईमानदार, परिश्रमी, आज्ञाकारी, स्वावलम्बी तथा प्रतिष्ठित बनें। लोग राजनीति में हिस्सा लेते हैं, उन्हें इस बात की चिंता होती है कि कहीं उनके प्रतिद्वंद्वी उनके मुकाबले में आगे ना निकल जायें। चुनाव होने पर कहीं वे हार न जायें। या फिर कहीं वे मंत्री और वह भी महत्वपूर्ण विभाग के मंत्री बनने से चूक न जायें। आजकल की लड़कियों को अपनी सुंदरता की ज्यादा चिन्ता होती है। वे मेकअप करती हैं, डाइटिंग करती हैं ताकि वे अन्य लड़कियों के मुकाबले ज्यादा आकर्षक तथा प्रभावशाली दिखायी दें। अजकल अनेक लोग दो नम्बर का धन्धा करते हैं। खाने पीने की चीजों में मिलावट करते हैं, माप तोल में बेइमानी करते हैं ताकि ज्यादा लाभ कमा सकें परन्तु उन्हें सदा इनकम टैक्स वालों की तथा सरकार द्वारा उनकी चीजों में मिलावट के पकड़े जाने की चिन्ता लगी रहती है। यूँ तो सरकारी कर्मचारी, अधिकारी तथा मंत्री रिश्वत लेते हैं तथा अनैतिक कारनामे भी करते हैं फिर भी उन्हें इस बात की चिन्ता लगी रहती है कि कोई गुपचुप तरीके से उनकी वीडियो फिल्म ना बना रहा हो। हमारे परिवार में से कोई बाहर गया हुआ हो, उसके वापिस सुरक्षित आने तक हमें चिन्ता सताती रहती है। बीमार आदमी को अपनी बीमारी की चिन्ता सताती रहती है। अगर कोई अमीर आदमी है उसका कोई बेटा नहीं है तो उसे अपने उत्तराधिकारी के ना मिलने तथा खून पसीने की कमाई धन दौलत के बरबाद होने की चिन्ता होती है।

इस तरह हम सभी किसी न किसी चिन्ता का शिकार होते रहते हैं। चिन्ता एक मानसिक स्थिति है जिसमें आदमी किसी चीज की कमी, किसी चीज के खो जाने, प्रतिद्वंदी या विरोधी द्वारा नुकसान करने या आक्रमण किये जाने, अच्छा जीवन साथी न मिलने, बीमार होने, मर जाने के डर से भयभीत होता है। चिन्ता के कारण आदमी को रात को नींद नहीं आती, भूख नहीं लगती, डर लगा रहता है, तनाव पैदा होता है, कुछ अच्छा नहीं लगता, किसी के साथ बात करने

को मन नहीं करता, बेचैनी होती है, आदमी को कोई बीमारी लग जाती है, कई बार हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं। आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है। अगर चिन्ता का समय रहते समाधान न किया जाये तो परिणाम खतरनाक हो सकते हैं। कई लोगों का कामधंधा ही चौपट हो जाता है, कई लोगों की घर गृहस्थी खराब हो जाती है, कई लोगों का दूसरों के साथ झगड़ा हो जाता है और कई लोग चिन्ता ग्रस्त होकर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर देते हैं। अतः चिन्ता रूपी दैत्य पर जितनी जल्दी विजय पाई जाये उतना ही अच्छा है। जब कभी किसी बात की चिन्ता लगे उसके कारण को पता करके समाधान करने की कोशिश करनी चाहिए। संयम से काम करना चाहिये। कुछ चिंताएँ क्षणिक तथा निर्मूल होती हैं। कुछ चिंताएँ गलतफहमी के कारण पैदा होती हैं जिन्हें आसानी से दूर किया जा सकता है। जब कभी भी किसी बात की चिन्ता सता रही हो तो अपने बुजुर्गों, हितैषियों, मित्रों तथा शुभचिंतकों से विचार विमर्श करके बोझ हल्का किया जा सकता है। धार्मिक पुस्तकें पढ़कर या फिर चिंता के स्थान से कुछ दूर जाकर भी इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। चिन्ता चिता समान है। हमारे में से कौन जीते जी इस चिता में भस्म होना चाहेगा?अतः चिन्ताओं से डरना नहीं चाहिये। चिन्ता मनुष्य के धैर्य की परीक्षा लेकर उसे मजबूत बनाती है। समझदार तथा हिम्मत वाले आदमी चिन्तारूपी परीक्षा में से सदा पास हो जाते हैं और बाकी फेल हो जाते हैं। आओ चिन्ता रूपी भूत को अपने जीवन से भगायें और सुख से जिंदगी बितायें।

मकान नं. ९७५-बी/२०
राजीव निवास, शक्तिनगर, ग्रीन रोड़
रोहतक- १२४००१

सत्यार्थप्रकाश पहेली-६

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

	१ थि		■	ना		२ य		■	३	द्ध
■		४ रु	■	५	त्र	■	■	६	६	न्द
७	क्त	■	८ प		८	श्व		■	९ सू	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो सब विस्तृत जगत् का विस्तार करने वाला है इसलिये उस परमेश्वर का यह नाम है।
२. जल और जीवों का नाम नारा है। वे अयन अर्थात् निवास स्थान हैं जिसका इसलिये सब जीवों में व्यापक परमात्मा का यह नाम है।
३. जो स्वयं पवित्र, सब अशुद्धियों से पृथक् और सबको शुद्ध करने वाला है, इससे उस ईश्वर का यह नाम है।
४. जो सत्यधर्मप्रतिपादक सकल विद्यायुद्र वेदों का उपदेश करता, सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अधिरा और ब्रह्मादि गुरुओं का भी गुरु और जिसका नाश कभी नहीं होता, इसलिये उस परमेश्वर का यह नाम है।
५. जो सबसे स्नेह करे और सबको प्रीति करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का यह नाम है।
६. जो आनन्दस्वरूप, जिसमें सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते और सब धर्मात्मा जीवों को आनन्द युक्त करता है, इससे ईश्वर का यह नाम है।
७. जो सर्वदा अशुद्धियों से अलग और सब मुमुक्षुओं को क्लेश से छुड़ा देता है, इसलिये परमात्मा का यह नाम है।
८. जो ईश्वरों का अर्थात् समर्थों में समर्थ, जिसके तुल्य कोई भी न हो उस का यह नाम है।
९. अप्राणी अर्थात् स्थावर जड़ अर्थात् पृथिवी आदि हैं, उन सबके आत्मा होने और स्वप्रकाशरूप सबके प्रकाश करने से परमेश्वर का यह नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- ''अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ'' एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०१४

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, काण्डाघाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर

वेद और ऋषि ग्रन्थों में समग्र उन्नति का संदेश

प्रो.उमाकान्त उपाध्याय

यह सर्वसम्मत ऐतिहासिक सत्य है कि भारतवर्ष की पुण्यभूमि पर जब से आर्य (हिन्दू) आकर बसे तब से लेकर महाभारत के हजार दो हजार साल पहले तक भारतवर्ष संसार का सर्वश्रेष्ठ, सब प्रकार से उन्नत समृद्ध देश था। यह भी प्रकृति का दैवी विधान है कि जब आवश्यकता से बहुत अधिक समृद्धि, सुख सुविधा हो जाती है तो सर्वसाधारण के जीवन में विलास, आरामतलबी, सदाचार का पतन आने लग जाता है।
समृद्धि के चरम उत्कर्ष पर, तप और सदाचार के अभाव में दुराचार, विलास बढ़ जाने से सुरा, सुन्दरी, पारस्परिक कलह के कारण व्यक्ति और राष्ट्र का अधःपतन होने लगता है। यह महाभारत काल में बहुत सुस्पष्ट दिखाई पड़ता है, जब धर्मराज भी पक्का जुवारी, धृतराष्ट्र जैसा राजा आँखों का अंधा तो था ही हृदय और बुद्धि से भी अति मलिन हो गया था। भीष्म पितामह और आचार्य द्रोण जैसे प्रतिष्ठित वृद्ध भी कुलवधू द्रौपदी के निष्ठुर अपमान को सह गए थे और तो और उस युग के सर्वश्रेष्ठ पुरुष, वेद वेदांग तत्वज्ञ श्रीकृष्ण अपने कुलको सर्वनाशी मदिरा पान और अन्तःकलह से नहीं बचा पाए थे और सारे यादव अपने में ही मर मिट गए थे। महाभारत के पश्चात् यज्ञों में पाखण्ड और पशु-हिंसा, सुरापान, बौद्धों का वज्रयान, चारित्रिक पतन, ये सभी देश के अधःपतन में सहयोगी बने। इसी के साथ तांत्रिकों का पंचमकार भी बहुमुखी पतन में सहयोगी बने। बौद्धों के अहिंसावादी उत्कर्ष में परमेश्वर को असत्य बताकर इस संसार की महिमा को प्रतिष्ठित किया। बौद्धों के कथन कि 'संसार सत्य है और ब्रह्म मिथ्या है' के उत्तर में आदि शंकराचार्य ने 'ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या' का सिद्धान्त निरूपित किया। बौद्धों ने ब्रह्म को मिथ्या कहा तो उत्तर में शंकराचार्य ने संसार को, जगत् को मिथ्या कहा। 'ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या' के सिद्धान्त का हमारे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर बड़ा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ा। जो समाज के श्रेष्ठ लोग थे, विद्वान् सदाचारी नेता होने के योग्य थे, वे जगत् को मिथ्या मानकर सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन से अलग थलग हो गए और देश, राष्ट्र सब प्रकार से पतन की ओर बढ़ चला। शूद्रों (मेहनतकशों) का अपमान, उनसे घृणा, नारियों का तिरस्कार आरम्भ हो गया। समाज में ऊँच नीच का भाव पैदा हो गया। साठ वर्ष के बूढ़े राणा, राजाओं के लिए सोलह साल की कन्याओं के डोले लड़कर भेजे जाने लगे। मुट्ठी भर हूण, पठान, मुगल आदि कच्चा मांस खाने वाले और चमड़ा पहनने वाले लुटेरों ने देश को तबाह कर दिया। महाराणा सांगा और सोमनाथ जैसे सैंकड़ों हजारों काण्ड देश में होने लगे। इस समग्र सर्वतोन्मुखी पतन का एकमात्र कारण यह था कि भारतवर्ष के जनजीवन से वेदों और ऋषियों के संदेश भुला दिए गए और उनकी जगह पर शंकराचार्य का जगन्मिथ्या, बौद्धों की वज्रयानी चरित्रहीनता और अहिंसा, तात्रिकों का पंचमकार सेवन आदि देश में प्रचलित हो गए। ध्यान देने की बात है कि वेद और ऋषियों के दर्शन संसार को सर्वतोमुखी समग्र उत्थान का संदेश देते हैं। भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति में 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष' को परम पुरुषार्थ कहा गया है। यहाँ धर्म के साथ अर्थ और काम को आवश्यक माना गया है। दर्शन के ऋषि कहते हैं **'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः'** यहाँ सांसारिक उन्नति और मोक्ष, दोनों को धर्म का अंग बताया गया है। दर्शनशास्त्र कहते हैं **'भोगापवर्गार्थं दृयश्यम्'**- यह संसार भोगों को भोगने और मोक्ष

की सिद्धि के लिए बनाया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है- 'साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।' महर्षि व्यास के वेदान्त दर्शन के प्रथम चार सूत्रों को देखने से सिद्ध होता है कि यह संसार वास्तविक है और स्वामी शंकराचार्य की उक्ति 'जगन्मिथ्या' उनकी अपनी उहा, सूझ बूझ, शायद बौद्धों को पराजित करने के लिए थी।
वेदान्त दर्शन का सूत्र है-

१. **अथाऽतो ब्रह्मजिज्ञासा'**- अब ब्रह्म की जिज्ञासा करते हैं।

२. **जन्माद्यस्ययतः**- क्योंकि उसी ब्रह्म ने इस संसार की सृष्टि, पालन और प्रलय की व्यवस्था की है।

३. **शास्त्र योनित्वात्**- उसी ब्रह्म ने वेदों का ज्ञान दिया है।

४. **ततु समन्वयात्**- जैसा वेदों में वर्णन है वैसा ही इस संसार में पाया जाता है, अर्थात् वेदों के ज्ञान और संसार की व्यवस्था में समन्वय है। कहा जाता है कि यह संसार परमेश्वर का दृश्य-काव्य है और वेद परमेश्वर का श्रव्य काव्य है।
दोनों ही परमेश्वरकृत हैं, दोनों में समन्वय है। उदाहरण के लिए सोनी का टी.वी. और उसी के मैनुअल (बुकलेट) में

समन्वय होता है। किसी और कम्पनी के टी.वी. और किसी और कम्पनी के बुकलेट में समन्वय नहीं होगा। जब वेद के ज्ञान और संसार की व्यवस्था में समन्वय है तो पता चलता है कि जिसने वेद ज्ञान दिया है उसी ने संसार का निर्माण किया है अर्थात् जगत् को परमेश्वर ने बनाया है और परमेश्वर की कृति मिथ्या नहीं हो सकती। अतः सिद्ध होता है कि 'जगन्मिथ्या' का सिद्धान्त सत्य नहीं है। भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य ग्रन्थ वेद हैं। चारों वेदों में बीस हजार से भी अधिक मंत्र हैं, इनमें हजारों मंत्रों में जीवन के उत्थान, सांसारिक उन्नति, अर्थ की सम्पन्नता आदि का बहुत सीधा औरा सुस्पष्ट उपदेश दिया गया है- उदाहरण के लिए कुछ मंत्र और उनके सरल से अर्थ यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं-

१.'स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां। पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्' -अथर्व.१६/७१/१ अर्थात् हमने वर देने वाली वेदमाता की स्तुति की, उसका अध्ययन किया और उस पर आचरण किया। इससे वेदज्ञान ने हमको आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन, बल, सब कुछ दिया और हमको ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष तक पहुँचाया।

२.'इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे। पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्,'

- ऋग्/२/२१/६

अर्थात् हे ऐश्वर्य देने वाले परमेश्वर, हमें श्रेष्ठ धन, सम्पत्ति दीजिये, हमें ज्ञान और दक्षता प्रदान कीजिए जो हमारे जीवन का पोषण करें। हमको मधुर प्रभावशाली वाणी दीजिए और हमारे जीवन में सदा सब दिन सुदिन, सुन्दर बने रहें।

३.'उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि'

- अथर्व. ८/१/६

अर्थात् परमेश्वर मनुष्य को आश्वासन उपदेश देते हैं कि हे मनुष्यों! हमने तुमको मनुष्य जीवन इसलिए दिया है कि तुम सदा अपने जीवन में अपने समाज में उन्नति करते रहो, ऊपर उठते रहो और कभी अवनति न करो। तुम और तुम्हारा समाज कभी पतन की ओर न जाये। तुम्हारे जीवन में सदा दक्षता, सबलता बनी रहे। इसका भाव यह है कि परमेश्वर ने हमें, हमारे जीवन को उन्नति और दक्षता का वरदान दिया है।

४. 'प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।।

- ऋग्वेद १०/१२१/१०

अर्थात् हे सब प्रजाओं के पालन करने वाले परमेश्वर, हम जिस जिस पदार्थ की कामनावाले होकर आपका आश्रय लेवें, आपसे प्रार्थना करें, वह वह हमारी सभी इच्छाएँ पूर्ण होवें और आप की कृपा से सब प्रकार के धन और ऐश्वर्यों के स्वामी होवें।

इस छोटे से लेख में हम यह प्रयास कर रहे हैं कि मानव सभ्यता के श्रेष्ठ ग्रन्थ वेदों में और ऋषियों के उपदेशों में हमें यह बताया गया है कि हमारा जीवन, हमारा समाज, यह संसार, सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति के लिए परमेश्वर ने बनाया है तथा यह जगत् मिथ्या नहीं है। हमारा देश और हमारा समाज जब तक इस आदर्श पर चलता रहा, हम संसार के सर्वाधिक सुखी, सम्पन्न राष्ट्र बने हुए थे। इन उपदेशों को भुलाकर, संसार की उपेक्षा करके हम निर्बल हो गए।

- ईशावास्यम्
पी-३०, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम
कोलकाता ७०००८९

अवश्य ध्यान दें

जुलाई १४ तक आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया जा रहा है।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

जो दूसरों के ज़ख्मों पर मरहम लगाता है खुद चंगा हो जाता है

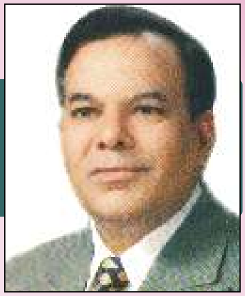

सीताराम गुप्ता

कविवर रहीम का प्रसिद्ध दोहा है :

यों 'रहीम' सुख होत है उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे ज्यों मेंहदी को रंग।।

अर्थात् दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेंहदी लगाने वाले की अंगुलियाँ खुद भी मेंहदी के रंग में रंग जाती हैं। जो इत्र बेचते हैं वो खुद उसकी बू-बास से महकते रहते हैं। जिस प्रकार से एक फूल बेचने वाले के कपड़ों और बदन से फूलों की सुगंध नहीं जा सकती उसी प्रकार से दूसरों की भलाई करने वाले व्यक्ति का कभी अहित नहीं हो सकता। दूसरों की मदद अथवा परोपकार का निःसंदेह बड़ा महत्त्व है। प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं परोक्ष रूप से भी इसका बड़ा महत्त्व है।

एक बुढ़िया थी जो बेहद कमजोर और बीमार थी। रहती भी अकेली ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतनी कमजोर थी कि खुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ थी। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। एक दिन बुढ़िया ने पास से गुज़रनेवाले एक युवक से कहा कि बेटा जरा मेरे कंधों पर ये दवा मल दे। भगवान तेरा भला करेगा। युवक ने कहा कि अम्मा मेरे हाथों की अंगुलियों में तो खुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुढ़िया ने कहा कि बेटा दवा मलने की जरूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी अंगुलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर अपने एक हाथ की अंगुलियों से बुढ़िया के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगी। बेटा, भगवान तेरी अंगुलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी अंगुलियों का दर्द भी गायब सा होता जा रहा है

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के बाद युवक की अंगुलियों पर कुछ मरहम लगी रह गई थी। उसने दूसरे हाथ की अंगुलियों से उसे पोंछने की कोशिश की तो मरहम उसके दूसरे हाथ की अंगुलियों पर भी लग गई। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक के दोनों हाथों की अंगुलियों का दर्द गायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनों हाथों की अंगुलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं।

तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाता है उसके खुद के जख्मों को भरने में देर नहीं लगती। "दूसरों के जख्मों पर मरहम लगाना" अब इस मुहावरे को भी देख लीजिए। दूसरे के जख्मों पर मरहम लगाने का अर्थ है किसी को सांत्वना देना, किसी की पीड़ा को कम करना। जरूरी नहीं इसके लिए कोई दवा या मरहम ही लगाई जाए क्योंकि यह पीड़ा भौतिक ही नहीं मानसिक भी हो सकती है। पीड़ा जो भी हो कष्टदायक होती है। यदि कोई किसी को किसी भी प्रकार की पीड़ा से मुक्त करता है तो पीड़ित को बड़ी राहत मिलती है। वह पीड़ा को कम करनेवाले या कष्ट को समाप्त करनेवाले के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है और आशीर्वाद या दुआएँ देने लगता है। कृतज्ञता की अवस्था कृतज्ञ को ही नहीं मदद करनेवाले को भी अच्छी लगती है। जब कोई उसके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करता है अथवा उसका धन्यवाद करता है या किसी भी अन्य रूप में आभार प्रकट करता है तो वह एकदम विनम्र होकर परमार्थ के भावों से भर उठता है। उसका मन करता है कि मैं सदैव लोगों के कष्ट दूर करने में लगा रहूँ। दुनिया के सभी लोग कष्टमुक्त हो जाएँ। ऐसी भावावस्था में व्यक्ति के शरीर में स्थित अंतःस्रावी ग्रंथियों से लाभदायक हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है जो उसे रोगों से बचाने तथा रोगग्रस्त होने पर शीघ्र रोगमुक्त करने में सहायक होते हैं।

किसी की मदद करने, कोई अच्छा काम करने अथवा निष्काम भाव से कोई समाजोपयोगी कार्य करने से समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ती है और इसके लिए लोग उस व्यक्ति की प्रशंसा भी करते हैं जिससे व्यक्ति को असीम परितुष्टि का अहसास होता है। यही असीम परितुष्टि का अहसास व्यक्ति के शरीर में उपयोगी हार्मोन सेरोटोनिन अर्थात् 'हैपी हार्मोन' के स्तर को बढ़ा देता है जो उसके स्वास्थ्य और रोग-मुक्ति के लिए बेहद उपयोगी होता है। दूसरों की मदद करके भी हम अपने लिए रोग-मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु सुनिश्चित कर सकते हैं इसमें संदेह नहीं।

ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४
फोन नं. ०९५५५६२२३२३

Fragrant Flower
Dr. S.C. Soni

God had a plan in creating you.
When God made you He
blessed the world with a very
special person.

Happy 80th Birthday

Many Many Happy Returns of the Day.

All Trusties
Shrimad Dayanand Satyarth Prakash Nyas, Udaipur
& Satyarth Saurabh family

न्यास की भव्य यज्ञशाला में यज्ञ करते हुए डॉ. सोनी दम्पति

Dr. S.C. Soni is a fragrant flower. His presence spreads the fragrance that has grown in each of the billions of cells of his body since he was borne. He inherited this fragrance from his illustrious parents and shares this fragrance with his brothers and sisters. He is blessed with an equally fragrant wife, Saroj, who was nurtured in a holy divine family.

He became a doctor with a mission to share his fragrance with his patients, and to give them good health and life. He was conscripted by the Government of Burma and posted to a remote unknown village called "Tanai" which was a jungle (Forest) on the border of Burma near Assam (India). There was no motorable road to that village. The only available transport was elephant. There was no electricity and the only available lights were the candles or the hurricane lamps. Supplies were made available to him by helicopter that visited him once a week. But Dr. Soni was not shaken by the hardship of life.

The fragrance of flower in him kept him happy, joyful and satisfied, doing his duties with love and compassion. When he was posted there he had two children, Shubhada and Shashank. Later when he visited us in Mandalay, his son who was about two years old then saw the electric bulb for the first time. He tried to blow off the bulb as he was blowing off a candle. Because that was the only way he knew to blow off a burning light. But Dr. Soni was always peaceful, happy, joyful and satisfied.

There was acute shortage of Doctors in U.S.A. during the Vietnam war. U.S. Government allowed the hospitals in U.S.A. to recruit doctors from India and Burma. Dr. Soni was selected by the Augustana Hospital of Chicago. The hospital sent him air tickets for him and his wife and

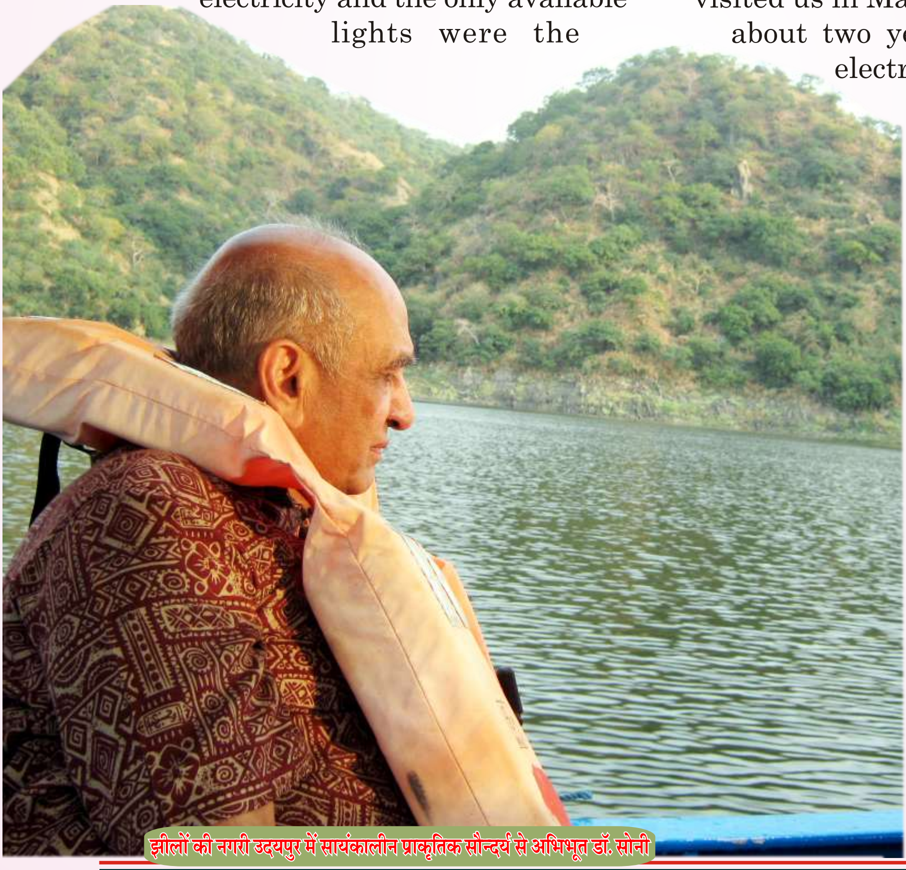

झीलों की नगरी उदयपुर में सायंकालीन प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिभूत डॉ. सोनी

children's passes and on arrival he was taken to his residence in a limousine- as if God had come to help the American patients. He did his internship in the University of Chicago and specialized in radiation oncology and served in various hospitals in and around Chicago. He saved the lives of thousands of people.

He adopted his new country as his own and even joined the army and served with enthusiasm. He rose to become a full colonel in the army.

अभिनेता सुनील दत्त के साथ डॉ. सोनी एवं उनके पिता श्री बरकतराम जी

He has been an illuminated jewel in his social and cultural life. He was nurtured in the wisdom of the Vedas , and tried to spread it's teachings by holding monthly Hawan at his residence for years, until he funded and founded a befitting building for the Arya Samaj of Chicagoland. He also helped in finding places for Bharat Seva Sangh in Chicagoand and Vipassana Center in Rockford. He was President of various religious, cultural and social organizations such as Arya Pratinidhi Sabha of U.S.A., Geeta Association, Gayatri Parivaar, and Hindu Temples and other organizations for which he was one of the best philanthropic contributor. He gave large sums of monies in donations to various organizations in and around Chicago.

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००६ के अवसर पर माननीय डॉ. सोनी को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य

He also became an idol of Indian culture in India, a prominent contributor for the Arya Samaj organizations in India and was greeted by the Arya Pratinidhi Sabha of India and All World Aryan League.

Government of India awarded him with a title of Bharat Bhushan on the Pravasi day in April 2005. He was awarded the title of Hind Ratna by the President of India on 26th january 2006. He was facilitated by various Arya Samaj Associations of

Delhi, Haryana, Rajasthan, Gujarat and Maharashtra. He was garlanded by the Arya Samaj of Rangoon and Myitkyina in Burma and was welcomed by the Arya Samaj Organizations of Singapore, Indonesia, Fizi, Australia and New Zealand.

He sponsored several persons in their migration to U.S.A. and He provided them shelter and assisted them in getting suitable employment. Most of the time he had two houses, one at Joliet and other at Dixon, the place of his work. His Joliet house was his guest house for many persons who needed accommodation. Several fresh immigrants and dignitaries have lived there with facility of fully furnished accommodation.

His parents had given him the name Sukh Dev Chand. He has been a messenger of and spreading Sukh and joy to all and everyone that came into his contact. Sukh means joy and comfort and Dev means one who gives and spreads. Dr' Soni has been giving and spreading SUKH all his life voluntarily and with zeal and enthusiasm. He stands firm for this noble cause at the age of 80. May God grant him long life to continue in his noble path.

To my mind Dr. Soni has been an embodiment of culture, intelligence, a pool of peace, love, compassion, joy for the success of others , sincerity, friendship, truthfulness, co-operation, forgiveness and healing-ever fresh and fragrant like a flower blooming and dancing on the rise of the sun.

- Shiv Verma

नवलखा महल, उदयपुर में डॉ. सोनी जी एवं उनकी सहधर्मिणी माननीया सरोज जी का स्वागत करती नन्ही बालिकाएँ

Dr. Soni and Mrs Saroj Soni are so dedicated to Arya Samaj that Dr. Soni purchased a church building with millions of dollars and convert it into Arya Samaj Chicago. It is a rare example of dedication of a person towards the mission of Maharishi Dayanad Saraswati. We, the trusties of Shrimad Dayanand Satyarth Prakash Nyas Udaipur are really fortunate to have his patronage to our various activities and programs run by the Trust exclusively. He continues to give great moral and financial support to our trust.

- Ashok Arya, Acting President

शतशः नमन हे ! तत्त्वबोध

ऋषि दयानन्द की फुलवारी से,
जब निःसृत हुई जीवन सुगंध।
आनन्द गंग में हो निमग्न,
तुम बने पूर्ण आनन्द कन्द।।
जीवन सुगंध ने महकाया,
व्यक्तित्व स्वर्णसम दमकाया।
पावन प्रकाश तुम पर छाया,
जीवन में नव उत्सव आया।।
त्यागा तुमने धन और धाम,
त्याग ऐषणा हुए निष्काम।
तज दिए जगत् के फंद मंद,
पा नव स्वरूप अरु नव आनन्द।।
रच दिए त्याग, तपस्या के तुमने,
हे यतिवर विविध छन्द।
कायाकल्पी ऋषि-स्थल के,
दिखलाया तुमने सर्वमेध।।
भौतिक सुख की असारता का,
पहचाना तुमने सत्यभेद।
सार तत्त्व का हुआ बोध,
शतशः नमन हे तत्त्वबोध।।

– अशोक आर्य

न्यास के संस्थापक अध्यक्ष (स्मृति शेष) स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी की
दशवीं पुण्यतिथि पर विनम्र भावाञ्जलि – न्यास परिवार

शठे शाठ्यं समाचरेत्

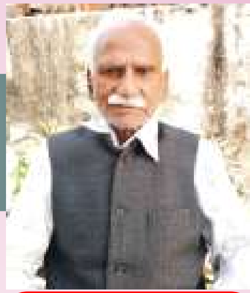

डॉ.ब्रजमोहन जावलिया

भारत भूमि में आज सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ है। चोर, डाकू, लुच्चे लफंगों का बोलबाला है। राह चलते मनुष्य मारे जा रहे हैं, डाकू घरों में घुसकर डाका डाल रहे हैं, सन्नारियों के तन पर पहने गहने कपड़े ही नहीं, उनके सतीत्व का हरण करने में भी इन दुष्टों को भय नहीं सताता। जीपों, कारों, मोटरसाइकिलों आदि वाहनों में आरूढ़ हो रात दिन विचरण करते ये दस्यु कुकर्म करने में किंचित भी नहीं अघाते। कोषागारों, एटीएमों पर डाके डालकर लोगों की संचित निधि लूटी जा रही है। वायुयानों तक का अपहरण कर यात्रियों को मौत के घाट उतारने में ये लोग अपने पौरुष का परिचय दे रहे हैं। आज मठों, मंदिरों के महन्त, साधु संन्यासी तक इस प्रकार के पापकर्म करने से अछूते नहीं रहे। राजसत्ता को सँभालने वाले जनरक्षक भी जनभक्षक बन ये सब कुकृत्य कर रहे हैं।

सैंकड़ों वर्षों पूर्व महात्मा कबीर ने लोगों को उपदेश दिया था- जो तो कूं काँटा बुये, ताहि बोय तूं फूल।

भारत वर्ष की आजादी के लिए अपना तन, मन और धन सौंप देने वाले महात्मा गाँधी ने भी कबीर के उपदेश को अपनाते हुए लोगों को अहिंसा के इसी मंत्र को अपनाने का उपदेश दिया था... 'यदि कोई तुम्हारे गाल पर चपत धरे तो तुम अपना दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो।' गाँधी जी की इस प्रकार की अहिंसा एक सामयिक अस्त्र था पर आज हमारे राष्ट्र के अधिनायकों का यह शाश्वत मंत्र बन गया है। अहिंसा का यही मंत्र सदियों से हमारी गुलामी का कारण बना था और आज इन उपदेशों ने हमें सर्वथा नपुंसक ही बना दिया है।

हम भूल गए हमारे प्राचीनतम ऋषि मुनियों, राजनीतिज्ञों के उपदेशों को जो हमें सज्जनों के साथ सज्जनता का और दुष्टों के प्रति दुष्टता का व्यवहार करने की शिक्षा दे गए थे। ऋग्वेद की ऋचाएँ ऐसे लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करने को कहती हैं- देखिए:-

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो
बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।। ऋगवेद १।५१।८

जो चोर डाकू, विश्वासघाती, विषयलम्पट, हिंसादि कर्मों से युक्त, अच्छे कामों में बाधक स्वार्थी, वेद विद्या-विरोधी, नास्तिक, सर्वोपकारक यज्ञों के विनाशक हैं, उन सबको मूल सहित नष्ट कर दो।

इन्द्रो यो दस्यूंरंधरां अवातिरत् । विश्वहायो विश्वाहा ।।
रिषत=क्षस्विन=प्रतिदह

जैसे आदेश हमको यही उपदेश दे रहे हैं कि इन हिंसक विनाशक प्राणियों को जला दो, ध्वस्त कर दो। वेद में पुनः उपदेश दिया है कि समाज में अपने विष का प्रसार करके उसे दूषित करने वाले ऐसे लोग साँप और बिच्छुओं के समान हैं- उन्हें घन (हथौड़े) से कुचल दो और लाठी का प्रहार कर मौत के घाट उतार दो।

इसीलिए यजुर्वेद में कहा है **माहिर्भूर्मा पृदाकु** ६।१२

'हे मनुष्यों! तुम कभी साँप और बिच्छू जैसे विषैले प्राणियों के समान आततायी, आतंकवादी, अत्याचारी बनकर समाज को कष्ट मत दो।' सीधे सादे ,सरल और सच्चे बन कर रहो। यदि कोई तुम्हारे साथ साँप बिच्छू के समान अत्याचारी बन कर व्यवहार करे तो उसको ऐसी सजा दें कि वह फिर कभी ऐसा दु:साहस न करे।

दुष्ट दस्युवों के प्रति अहिंसा का व्यवहार राष्ट्र को नपुंसक बना रहा है। सभ्य और सज्जन मनुष्यों का समुदाय इसी कारण कुछ बोल नहीं पाता। उनकी वाणी मृतप्राय हो रही है। अथर्ववेद कहता है- विद्या, ज्ञान आदि से द्वेष करने वाले अविद्या, अज्ञानादि से स्नेह संबंध बनाये रखने वाले दिन में प्रकट में साधु बन कर और रात में चोर डाकू, भेड़ियों की भाँति इक्के दुक्के पर आक्रमण कर धन छीनने

वाले और सदा ऐसी ही ताक में रहने वाले गुण्डों, कुत्तों की तरह भौंकने वालों, डण्डों से डरने वालों और अपने ही वर्ग से अकारण बैर रखने वालों, सुपर्ण पक्षी की तरह घमंडी और गिद्धों के समान मुर्दों के मांस के लोभी मानवों को मसल दो, त्याग दो।

नीति भी यही कती है-

खलानां कण्टकानां, च द्विधेव प्रतिक्रिया।

उपनतो मुख भङ्ग वा दूरादेव विसर्जनम्।।

आप ताकतवर हैं तो उपर्युक्त नीति वाक्यों को जीवन में उतार लो और निःशक्त हैं तो कबीर और गाँधी के अहिंसा के मार्ग को अपना लो। श्रीमद्भागवद्गीता में श्री कृष्ण कहते हैं, 'ये यथा भम्प्रदयन्ते तांस्तेथैव भजाम्यहम्।' जो मुझसे जैसा व्यवहार करते हैं मैं भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करता हूँ। सज्जनों के साथ सज्जनता का और दुष्टों के साथ दुष्टता का। महाभारत में यही बात कृष्णद्वैपायन ने कही है-

कृते प्रति कृतं कुर्याद्धिंसिते प्रतिहिंसितम्।

अत्रदोषं न पश्यामि शठे शाठ्यं समाचरेत्।।

महाभारत में भीष्म पितामह युधिष्ठिर को धर्मोपदेश देते हुए इन्हीं नीतिगत बातों को दोहराते हुए कह रहे हैं कि जो मनुष्य जैसा बर्ताव करे उससे वैसा ही वर्ताव करना धर्म है। छल कपट को छल कपट से ही नष्ट करना चाहिए और साध्वाचारी के प्रति साधुता का व्यवहार करना चाहिए।

यस्मिन्यथा वर्तते यो मनुष्या स्तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।

भयाचपारो भायया बाधित व्यसाध्वाचार साधुना प्रत्युपेयः।

द्रोपदी ने भी दुर्योधन के साथ संधि वार्ता हेतु जाते समय कृष्ण से यही कहा था कि अवध्य का वध करने में जिस प्रकार पाप का भागी बनना पड़ता है वैसा ही वध करने योग्य का वध न करने में भी है। धर्म के ज्ञाता जन यह सब जानते हैं। मनु महाराज ने आततायी शब्द की व्याख्या करते हुए कहा था कि-

अग्नि दो, गरदश्चैव शस्त्र पाणिर्धना पह

क्षेत्रदारश्च हरश्चैव षठैते ह्यातायिन।।

आगजनी करने वाले, जहर देने वाले, हथियार उठाकर मारने को उद्यत होने वाले परायों के धन का हरण करने वाले, भूमि और स्त्री का हरण करने वाले आततायी हैं इनका वध करते समय ननुनच नहीं करना चाहिए।

आततायिनमायान्तं हन्यादेवा विचारयन्

धर्मयुक्त कामों के विनाशक, व्यक्ति या समष्टि के विघातक, विश्वशांति के विनाशक, विध्वंशक हमारे शत्रु हैं। ये आततायी हैं, आतंक का प्रसार करने वाले हैं। इनको समाप्त करना ही हमारा धर्म है।

शातयिता धर्माणां शातयिता विश्वशान्तेर्मानशान्तेर्वा।

दस्युवों को साधु वचनों से सही मार्ग पर लाने का प्रयत्न करने वाला, विशालकाय शक्तिमान गजों को मृणाल के जैसे कोमल तन्तुओं से बाँधने की तमन्ना करने वाले के समान है। वज्र के समान कठोरतम हीरा मणि को सिरस के समान नाजुक फूल के स्पर्श से खण्ड खण्ड करने की कामना के समान है। क्या मधु की एक बूंद डाल कर क्षार समुद्र को क्षीरसागर बनाया जा सकता है? स्वकाय, स्वजाति, स्वग्राम, स्वप्रदेश और स्वदेश रक्षा के भार को सिर पर उठाने वाले विचार करें।

❑❑❑

१०१ भट्टयानी चौहट्टा, उदयपुर ३१३००१

'अशोक' वाटिका में, एक पुष्प खिला है न्यारा
अपार हर्ष से भर उठा ननिहाल सारा।।
दादी की आँखों का तारा,
बाऊ (दादा) का छुटकू प्यारा
'श्रुति', 'स्तु', 'अस्मि' का, भैया राजदुलारा।।
पापा 'प्रशान्त' का जग में, नाम करे उजियारा।
आओ मिल करें अभिनन्दन,
आया प्यारा 'प्रिया'- नन्दन।।

- संचिता जैन (छोटी नानी)

पौत्र जन्म के शुभ अवसर पर सत्यार्थ सौरभ के सम्पादक व न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य को बधाई एवं शुभकामनाएँ। - न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

अविद्या

१. मूसा ने अपनी छड़ी से समुद्र को दो भागों में विभाजित कर यहूदियों के जाने के लिए सूखी भूमि उपस्थित कर दी।
२. बाल कृष्ण के चरण स्पर्श से उफनती यमुना में जल का स्तर कम हो गया।

मौजिजे अर्थात् देवीशक्ति की बातें सब अन्यथा हैं। भोले-भाले मनुष्यों के बहकाने के लिए झूठ-मूठ चला ली हैं, क्योंकि सृष्टिक्रम और विद्या से विरुद्ध सब बातें झूठी ही होती हैं।

इस हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश एक बार अवश्य पढ़ें।

रामकथा के कुछ विवादास्पद प्रसंग

– प्रो. योगेशचन्द्र शर्मा

दृष्टिकोण

वाल्मीकि रामायण को विश्व का प्रथम काव्यग्रन्थ कहा जाता है। किन्तु यह कहना सत्य नहीं है कि इससे पूर्व काव्य था ही नहीं। रामायण की रचना अनुष्टुप छन्द में की गई है और इस छन्द में 'रामायण' से बहुत पहले मनुस्मृति लिखी जा चुकी थी। रामायण को आदि काव्यग्रन्थ कहने का अभिप्राय मात्र इतना है कि एक ऐतिहासिक कथा को मौलिक काव्यकृति के रूप में विश्व में प्रथम बार 'रामायण' में ही प्रस्तुत किया गया।

रामायण मूलतः सत्य घटना पर आधारित है। रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि ने इस सम्पूर्ण घटनाचक्र को स्वयं देखा है अथवा व्यक्तिशः उसकी जानकारी प्राप्त की है। कथा के वर्णन में काव्य सुलभ अतिशयोक्ति सहज संभव है। यह अतिशयोक्ति वाल्मीकि रामायण में अपेक्षाकृत कम तथा तुलसीकृत रामचरित मानस में अधिक है। घटना के सत्य होने के बावजूद इसका निश्चित समय बतलाना कठिन है। कुछ पाश्चात्य लेखकों ने इसे ईसा से केवल

१५०० वर्ष पूर्व की घटना माना है, लेकिन निश्चित ही यह गलत है। यह प्रागैतिहासिक काल की घटना है, जो ईसा से लगभग ५-६ हजार वर्ष पहले की है। कुछ भारतीय लेखकों ने अत्यधिक उत्साही होकर इसे लाखों वर्ष पुरानी घटना भी बतला दिया है, लेकिन इस अतिशयोक्ति को स्वीकार करना कठिन है। श्री जगदीश्वरानंद सरस्वती ने अपने ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' (प्रकाशक आर्य साहित्य-भवन, नयी सड़क, नयी दिल्ली) में की गयी टिप्पणियों में इस घटना को एक करोड़, इक्यासी लाख, उनचास हजार वर्ष पूर्व की माना है। वे अपने पक्ष में एक अद्‌भुत तर्क यह भी देते हैं कि वाल्मीकि रामायण में, रावण के द्वार पर सफेद चार दाँत वाले हाथियों के होने का उल्लेख है (चतुर्थ सर्ग-सुन्दर कांड) और इस प्रकार के चार दाँत वाले हाथी लगभग ढाई करोड़ वर्ष पूर्व से लेकर पचपन लाख वर्ष पूर्व तक पाए जाते थे। स्पष्ट ही केवल इस तर्क के आधार पर रामकथा की कथित प्राचीनता को तर्कसंगत प्रमाणित नहीं किया जा सकता। इससे केवल इतना माना जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि को चार दाँत वाले हाथियों का ज्ञान था, जिसे उन्होंने आलंकारिक रूप में रावण के महल के साथ जोड़ दिया।

महर्षि वाल्मीकि की जाति और उनके कर्म के बारे में भी काफी मतभेद हैं। कुछ विद्वान् उन्हें भार्गव के कुलीन परिवार का मानते हैं और कुछ उन्हें भूतपूर्व डाकू कहते हैं। जनश्रुति के अनुसार डाकू वाल्मीकि को राम का नाम लेने से भी परहेज था। इसलिए प्रारम्भ में उन्होंने मरा-मरा कहना शुरू किया जो बाद में धीरे-धीरे ध्वनि परिवर्तन के साथ स्वयमेव 'राम' बन गया। वाल्मीकि के उत्कृष्ट साहित्य को देखकर यह नहीं लगता कि वाल्मीकि कभी डाकू रहे होंगे अथवा वे किसी पिछड़े या अल्प शिक्षित परिवार के सदस्य रहे होंगे। कुछ लोग उन्हें अछूत जाति का मानते हैं और उसके प्रमाण में यह तर्क देते हैं कि भंगियों में आज भी वाल्मीकि को विशेष स्थान दिया जाता है। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार के इस अनुमान में भी काफी वजन है कि महर्षि वाल्मीकि संभवतः भंगियों में ही किसी सुशिक्षित पुरोहित परिवार के सदस्य रहे होंगे (प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिकयुग-पृष्ठ-१६१)। उनका तर्क है कि अनेक स्थानों पर भंगियों में भी ऐसा वर्णन मिलता है, जो ब्राह्मण पुरोहितों के समान पूजन करता है, दान लेता है तथा आशीर्वाद देता है। श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने वाल्मीकि को ऋषि-पुत्र बतलाते हुए अपने समर्थन में उनके इन शब्दों को उद्धृत किया है-

प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघव नन्दन
मनसा कर्मणा वाचा भूतपूर्व न किल्बिषम्

अर्थात् "हे राम, मैं प्रचेतस मुनि का दसवाँ पुत्र हूँ।
मैंने मन वचन कर्म से कभी पापाचरण नहीं किया है।"

वाल्मीकि का यह आत्मपरिचय उत्तरकाण्ड में दिया हुआ है, जिसे अधिकांश विद्वान्, बाद में किसी अन्य के द्वारा जोड़ा हुआ मानते हैं। स्वयं श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। तब इस आधार पर वाल्मीकि का वंश-निर्धारण कैसे तर्कसंगत हो सकता है? वाल्मीकि किसी भी जाति, वर्ग या वंश के रहे हों, इससे उनके साहित्य की उत्कृष्टता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसीलिए इस संबध में विवाद व्यर्थ है। उत्तरकांड निश्चित ही बाद में जोड़ा हुआ अंश है। उसकी भाषा और शैली शेष रामायण से अलग हटकर है।

वाल्मीकि की मूल रामायण युद्धकांड पर ही समाप्त हो जाती है। युद्धकांड के अन्त में रामराज्य के विस्तृत वर्णन के अतिरिक्त रामायण महात्म्य का वर्णन उसके अन्त में ही होता है। युद्धकांड में यह सब करने के बाद उत्तरकांड में नए सिरे से रावण की चर्चा करना तथा रामराज्य का पुनः वर्णन करना असंगति को जन्म देता है, जिसकी अपेक्षा कवि शिरोमणि वाल्मीकि से नहीं की जा सकती। उत्तरकांड को क्षेपक मानने के पक्ष में अन्य अनेक तर्क भी जाते हैं। उदाहरणार्थ महाराज भोज के समय 'चंपू रामायण' लिखी गयी थी, जिसे वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त रूप माना जाता है। इसमें भी केवल युद्धकांड तक की कथा का वर्णन है। इसी प्रकार इटली के एक संस्कृतज्ञ गौरेशियो ने वाल्मीकि रामायण का अपनी भाषा में अनुवाद किया था। उसमें भी उत्तरकांड की चर्चा नहीं है। उत्तरकांड की सर्वाधिक प्रमुख घटना सीता-परित्याग की है और इस घटना की चर्चा सर्वाधिक प्राचीन पुराण, नृसिंह-पुराण जैसे अन्य प्राचीन पुराणों में भी इस घटना की चर्चा नहीं है। अध्यात्म-रामायण और तमिल-रामायण में भी इसका उल्लेख नहीं है।

उल्लेखनीय है कि रामायण में श्री राम के चरित्र को कलंकित करने वाली दो प्रमुख घटनाएँ सीता-परित्याग तथा शम्बूक-वध, उत्तरकांड में ही हैं। एक साधारण धोबी द्वारा शंका उत्पन्न करने पर राम अपनी पत्नी को त्याग देते हैं और आश्चर्य इस बात का है कि ऐसा करते समय वे अपने परिवार के वरिष्ठ सदस्यों तथा शेष जनता के विरोध की भी चिन्ता नहीं करते। स्पष्ट ही इसे न तो तर्कसगंत माना जा सकता है, न किसी आदर्श का प्रेरक और न किसी राजनीति या कूटनीति का अंग। इसी प्रकार जो राम, अछूत केवट को गले लगाते है, शबरी द्वारा दिए गए फलफूल बड़े प्रेम और सम्मान के साथ खाते हैं वही राम शम्बूक का वध केवल इसलिए कर दें कि छोटी जाति का होते हुए भी उसने तपस्या की थी। यह बात किसी भी आधार पर गले नहीं उतर सकती।

वस्तुस्थिति से प्रतीत होता है कि हिन्दू धर्म में जब पुरोहितों तथा उनके पाखंडों के विरुद्ध विद्रोह की भावना उभरी, तब कुछ लोगों ने हमारी प्राचीन संस्कृति को भी विकृत करना शुरू कर दिया। उसी दौर में लिखे गये कुछ ग्रन्थों में सीता परित्याग या शम्बूक वध की घटनाओं का निर्माण किया गया। इन ग्रन्थों में राम कथा के संबंध में अन्य अनेक अजीबोगरीब बातें भी लिखी गयीं। उदाहरणार्थ प्राकृत भाषा में तीसरी या चौथी शताब्दी में लिखी एक अन्य रामायण में सीता परित्याग की तो चर्चा की ही गयी है, इसके साथ ही राम की आठ हजार पत्नियाँ तथा लक्ष्मण की १६ हजार पत्नियाँ भी बतलायी गयी हैं। एक अन्य ग्रन्थ 'दशरथ जातकम' में सीता को राम की बहन बतलाया गया। बौद्धकवि गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' और सोमदेव की 'कथा सरित्सागर' में भी सीता परित्याग की घटना का उल्लेख किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार के ग्रन्थों के रचयिताओं ने अथवा उनके समर्थकों ने ही तीसरी चौथी शताब्दी के आसपास अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए उत्तरकांड के नाम से एक नया अध्याय वाल्मीकि रामायण में जोड़ दिया। यह भी संभव है कि उन दिनों की परिस्थितियों के अनुरूप समाज में महिलाओं और शूद्रों की स्थिति को हीन प्रमाणित करने के लिए किन्हीं राम-भक्त पुरोहितों ने ही रामायण से यह छेड़छाड़ की हो।

क्रमशः ....

१०/६११ कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

➲ धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
➲ पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
➲ मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
➲ मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
➲ सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

संक्रमण काल के दौर में युवाशक्ति

कृष्ण कुमार यादव

युवा वर्ग मानव शक्ति का सबसे प्राणवन्त और ऊर्जस्वी वर्ग है, जो सदैव प्रगति और विकास का अगुआ रहा है। युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं, वे उसके भावी निर्माता हैं। चाहे वह नेता या शासक के रूप में हों, चाहे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार व कलाकार के रूप में हों। इन सभी रूपों में उनके ऊपर अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला एवं ज्ञान की परम्पराओं को मानवीय संवेदनाओं के साथ आगे ले जाने का गहरा दायित्व होता है। भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने में युवाशक्ति का सबसे बड़ा योगदान है। आज पूरी दुनिया की निगाहें युवा वर्ग पर टिकी हुई हैं। भारत विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों में से एक है और हमारी जनसंख्या का लगभग ८० फीसदी हिस्सा युवा है। ऐसे में युवाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। अगर इन युवाओं को सही ढंग से तराशा और सँवारा जाए तो वे राष्ट्रीय गौरव का एक नया इतिहास रच सकते हैं। युवा वर्ग अपनी मेधा, परिश्रम और लगन से सबको चमत्कृत कर सकते हैं और युवाशक्ति भारत को विश्व का मुकुटमणि बना सकती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि युवाओं के व्यक्तित्व का निर्माण हमारी प्राथमिकता में शामिल हो।

युवा शब्द अपने आप में ही ऊर्जा और आन्दोलन का प्रतीक है। युवा को किसी राष्ट्र की नींव तो नहीं कहा जा सकता पर यह वह दीवार अवश्य है जिस पर राष्ट्र की भावी छतों को सँभालने का दायित्व है। भारत की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी करीब ८० प्रतिशत है जो कि विश्व के अन्य देशों के मुकाबले काफी है। इस युवाशक्ति का सम्पूर्ण दोहन सुनिश्चित करने की चुनौती इस समय सबसे बड़ी है। जब तक यह ऊर्जा और आन्दोलन सकारात्मक रूप में है तब तक तो ठीक है, पर ज्यों ही इसका नकारात्मक रूप में इस्तेमाल होने लगता है वह विध्वंसात्मक बन जाती है। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर किन कारणों से युवा ऊर्जा का सकारात्मक इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है? वस्तुतः इसके पीछे जहाँ एक ओर अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों से दूर हटना है, वहीं दूसरी तरफ हमारी शिक्षा व्यवस्था का भी दोष है। इन सब के बीच आज का युवा अपने को असुरक्षित महसूस करता है, फलस्वरूप वह शार्टकट तरीकों से लम्बी दूरी की दौड़ लगाना चाहता है। जीवन के सारे मूल्यों के ऊपर उसे अर्थ भारी नजर आता है। इसके अलावा समाज में नायकों के बदलते प्रतिमान ने भी युवाओं के भटकाव में कोई कसर नहीं छोड़ी है। फिल्मी परदे और अपराध की दुनिया के नायकों की भाँति वह रातों रात उस शोहरत और मंजिल को पा लेना चाहता है, जो सिर्फ एक मृगतृष्णा है। ऐसे में एक तो उम्र का दोष उस पर व्यवस्था की विसंगतियाँ, सार्वजनिक जीवन में आदर्श नेतृत्व का अभाव एवं नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन ये सारी बातें मिलकर युवाओं को कुण्ठाग्रस्त एवं भटकाव की ओर ले जाती हैं, नतीजतन अपराध, शोषण, आतंकवाद, अशिक्षा, बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं।

भारतीय संस्कृति ने समग्र विश्व को धर्म, कर्म, त्याग, ज्ञान, सदाचार और मानवता की भावना सिखाई है। सामाजिक मूल्यों के रक्षार्थ वर्णाश्रम व्यवस्था, संयुक्त परिवार, पुरुषार्थ एवं गुरुकुल प्रणाली की नींव रखी। भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशेषता समन्वय व सौहार्द्र रहा है, जबकि अन्य संस्कृतियाँ आत्म केन्द्रित रही हैं। इसी कारण भारतीय दर्शन आत्मदर्शन के साथ-साथ परमात्मदर्शन की भी मीमांसा करते हैं। अंग्रेजी शासन व्यवस्था एवं उसके पश्चात् हुए औद्योगीकरण, नगरीकरण और अन्ततः उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के बाद तो युवा वर्ग के विचार-व्यवहार में काफी तेजी से परिवर्तन आया है। पूँजीवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बाजारी लाभ की अन्धी दौड़ और उपभोक्तावादी विचारधारा के अन्धानुकरण ने उसे ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा और शार्टकट के गर्त में धकेल दिया। कभी विद्या, श्रम, चरित्रबल और व्यावहारिकता को सफलता के मापदण्ड माना जाता था पर आज सफलता की परिभाषा ही बदल गयी है। आज का युवा अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों से परे सिर्फ आर्थिक उत्तरदायित्वों की ही चिन्ता करता है।

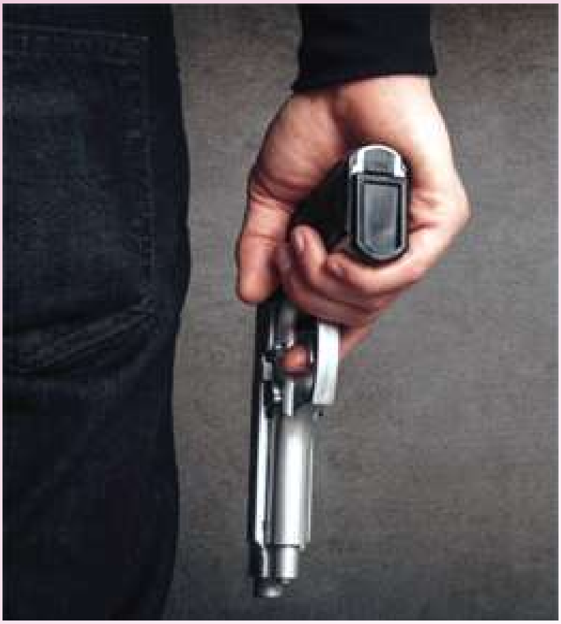

युवाओं को प्रभावित करने में फिल्मी दुनिया और विज्ञापनों का काफी बड़ा हाथ रहा है पर इनके सकारात्मक तत्वों की बजाय नकारात्मक तत्वों ने ही युवाओं को ज्यादा प्रभावित किया है। फिल्मी परदे पर हिंसा, बलात्कार, प्रणय-दृश्य, यौन-उच्छश्रृंखलता एवं रातों रात अमीर बनने के दृश्यों को देखकर आज का युवा उसी जिन्दगी को वास्तविक रूप में जीना चाहता है। फिल्मी परदे पर पहने जाने वाले अधोवस्त्र ही आधुनिकता का पर्याय बन गये हैं। वास्तव में परदे का नायक आज के युवा की कुण्ठाओं का विस्फोट है। पर युवा वर्ग यह नहीं सोचता कि परदे की दुनिया वास्तविकता नहीं हो सकती, परदे पर अच्छा काम करने वाला नायक वास्तविक जिन्दगी में खलनायक भी हो सकता है।

शिक्षा व्यक्ति के भौतिक और नैतिक दोनों प्रकार के विकास का आधार तैयार करती है। यह हमारी संवेदनाओं और अवधारणाओं को परिष्कृत बनाती है, जिससे मन-मस्तिष्क की स्वतंत्रता और उनके बीच तालमेल स्थापित करती है और वैज्ञानिक दृष्टि के विकास में सहायता मिलती है। शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि और कौशल को समृद्ध बनाती है। शिक्षा व्यवसाय नहीं संस्कार है, पर जब हम आज की शिक्षा व्यवस्था देखते हैं, तो यह व्यवसाय ही ज्यादा नजर आती है। शिक्षण संस्थाएँ, युवाओं के मस्तिष्क के लिए नए क्षितिजों के द्वार खोलने और उन्हें आज के जीवन संदर्भों की चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करने के लिए तैयार करती है। युवा वर्ग स्कूल व कॉलेजों के माध्यम से ही दुनिया को देखने की नजर पाता है, पर शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का अभाव होने के कारण वह न तो उपयोगी प्रतीत होती है व न ही युवा वर्ग इसमें कोई खास रुचि लेता है। अतः शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने का गोरखधन्धा बन कर रह गई है। पहले शिक्षा के प्रसार को सरस्वती की पूजा समझा जाता था, फिर जीवन मूल्य, फिर किताबी और अन्ततः इसका सीधा सरोकार मात्र रोजगार से जुड़ गया है। ऐसे में शिक्षा की व्यवहारिक उपयोगिता पर प्रश्नचिह्न लगने लगा है। शिक्षा संस्थानों में प्रवेश का उद्देश्य डिग्री लेकर अहम् सन्तुष्टि, मनोरंजन, नये सम्बन्ध बनाना और चुनाव लड़ना रह गया है। छात्र-संघों की राजनीति ने कॉलेजों में स्वस्थ वातावरण बनाने के बजाय माहौल को दूषित ही किया है, जिससे अपराधों में बढ़ोतरी हुई है। ऐसे में युवा वर्ग की सक्रियता हिंसात्मक कार्यों, उपद्रवों, हड़तालों, अपराधों और अनुशासनहीनता के रूप में ही दिखाई देती है। शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अभाव ने युवाओं को नैतिक मूल्यों के सरेआम उल्लंघन की ओर अग्रसर किया है, मसलन मादक द्रव्यों व धूम्रपान की आदतें, यौन-शुचिता का अभाव, कॉलेज को विद्यास्थल की बजाय फैशन ग्राउण्ड की शरणस्थली बना दिया है। दुर्भाग्य से आज के गुरुजन भी प्रभावी रूप में सामाजिक और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में असफल रहे हैं।

आज के युवा को सबसे ज्यादा राजनीति ने प्रभावित किया है पर राजनीति भी आज पदों की दौड़ तक ही सीमित रह गई है। स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने जब मताधिकार की उम्र १८ साल की थी तो उन्होंने 'इक्कीसवीं सदी युवाओं की' आह्वान के साथ की थी पर राजनीति के शीर्ष पर बैठे नेताओं ने युवाओं का उपयोग सिर्फ मोहरों के रूप में किया। विचारधारा के अनुयायियों की बजाय व्यक्ति की चापलूसी को महत्ता दी गई। स्वतंत्रता से पूर्व जहाँ राजनीति देश प्रेम और कर्तव्य बोध से प्रेरित थी, वहीं स्वतंत्रता बाद चुनाव लड़ने, अपराधियों को संरक्षण देने और महत्वूपर्ण पद हथियाने तक सीमित रह गई। राजनीतिज्ञों ने भी युवा कुण्ठा को उभारकर उनका अपने पक्ष में इस्तेमाल किया और भविष्य के अच्छे सब्जबाग दिखाकर उनका शोषण किया। विभिन्न राजनैतिक दलों के युवा संगठन भी शोशेबाजी तक ही सीमित रह गए हैं। ऐसे में अवसरवाद की राजनीति ने युवाओं को हिंसा भड़काने, हड़ताल व प्रदर्शनों में आगे करके उनकी भावनाओं को भड़काने और स्वयं सत्ता पर काबिज होकर युवा पीढ़ी को गुमराह किया है।

आदर्श नेतृत्व ही युवाओं को सही दिशा दिखा सकता है, पर जब नेतृत्व ही भ्रष्ट हो तो युवाओं का क्या? किसी दौर में युवाओं के आदर्श गाँधी, नेहरू, विवेकानन्द, आजाद जैसे लोग या उनके आसपास के सफल व्यक्ति, वैज्ञानिक और शिक्षक रहे। पर आज के युवाओं के आदर्श वही हैं, जो शार्टकट के माध्यम से ऊँचाइयों पर पहुँच जाते हैं। फिल्मी अभिनेता, अभिनेत्रियाँ, विश्व सुन्दरियाँ, भ्रष्ट अधिकारी, अपराध जगत्

के डॉन, उद्योगपति और राजनीतिज्ञ लोग उनके आदर्श बन गए हैं। नतीजतन अपनी संस्कृति के प्रतिमानों और उद्यमशीलता को भूलकर रातों रात ग्लैमर की चकाचौंध में वे शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं। पर वे यह भूल जाते हैं कि जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बज सकती उसी प्रकार बिना उद्यम के कोई ठोस कार्य भी नहीं हो सकता। कभी देश की आजादी में युवाओं ने अहम् भूमिका निभाई और जरूरत पड़ने पर नेतृत्व भी किया। कभी विवेकानन्द जैसे व्यक्तित्व ने युवा कर्मठता का ज्ञान दिया तो सन् १९७७ में लोकनायक के आह्वान पर सारे देश के युवा एक होकर सड़कों पर निकल आये पर आज वही युवा अपनी आन्तरिक शक्ति को भूलकर चन्द लोगों के हाथों का खिलौना बन गए हैं।

आज का युवा संक्रमण काल से गुजर रहा है। वह अपने बलबूते आगे तो बढ़ना चाहता है, पर परिस्थितियाँ और समाज उसका साथ नहीं देते। चाहे वह राजनीति हो, फिल्म व मीडिया जगत् हो, शिक्षा हो, उच्च नेतृत्व हो- हर किसी ने उसे सुखप्रद जीवन के सब्ज-बाग दिखाये और फिर उसको भँवर में छोड़ दिया। ऐसे में पीढ़ियों के बीच जनरेशन गैप भी बढ़ा है। समाज की कथनी करनी में भी जमीन आसमान का अन्तर है। एक तरफ वह सभी को डिग्रीधारी देखना चाहता है पर उन सभी के लिए रोजगार उपलब्ध नहीं करा पाता, नतीजतन-निर्धनता, महँगाई, भ्रष्टाचार इन सभी की मार सबसे पहले युवाओं पर पड़ती है। इसी प्रकार व्यावहारिक जगत् में आरक्षण, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, भाई-भतीजावाद और कुर्सी-लालसा जैसी चीजों ने युवा हृदय को झकझोर दिया है। जब वह देखता है कि योग्यता और ईमानदारी से कार्य संभव नहीं, तो कुण्ठाग्रस्त होकर गलत रास्तों पर चल पड़ता है। निश्चिततः ऐसे में ही समाज के दुश्मन उनकी भावनाओं को भड़काकर व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए प्रेरित करते हैं, फलतः अपराध और आतंकवाद का जन्म होता है। युवाओं को मताधिकार तो दे दिया गया है पर उच्च पदों पर पहुँचने और निर्णय लेने के उनके स्वप्न को दमित करके उनका इस्तेमाल नेताओं द्वारा सिर्फ अपने स्वार्थ में किया जा रहा है।

भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है। आज हम व्यापक भूमण्डलीकरण तथा गहन प्रतिस्पर्धा के कठिन दौर से गुजर रहे हैं। विज्ञान प्रौद्योगिकी का तेज गति से विस्तार हो रहा है। यह क्षेत्र लगातार अंतर आयामी, बहुआयामी और बहुउद्देशीय होता जा रहा है। आज भारत के पास उन बड़ी शक्तियों में शामिल होने की क्षमता है जिनकी २१वीं सदी में प्रमुख भूमिका होगी। ऐसे में सारी दुनिया भारत की युवाशक्ति पर टकटकी लगाए हुए है। इसमें कोई शक नहीं कि युवा वर्ग ही भावी राष्ट्र की आधारशीला रखता है, पर दुःख तब होता है जब समाज युवाओं में भटकाव हेतु युवाओं को ही दोषी ठहराता है। क्या समाज की युवाओं के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं? जिम्मेदार पदों पर बैठे व्यक्ति जब सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों का सरेआम क्षरण करते नजर आते हैं, तो फिर युवाओं को ही दोष क्यों? क्या मीडिया 'राष्ट्रीय युवा दिवस' को वही कवरेज देता है, जो 'वैलेण्टाइन डे' को मिलता है? एक व्यक्ति द्वारा अटपटे बयान देकर या किसी युवती द्वारा अर्द्धनग्न पोज देकर जो (बद) नाम हासिल किया जा सकता है वह दूर किसी गाँव में समाज सेवा कर रहे व्यक्ति को तभी मिलता है जब उसे किसी अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा जाता है। आखिर ये दोहरापन क्यों?

युवाओं ने आरम्भ से ही इस देश के आन्दोलनों में रचनात्मक भूमिका निभाई है- चाहे वह सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक या सांस्कृतिक हो। लेकिन आज युवा आन्दोलनों के पीछे किन्हीं सार्थक उद्देश्यों का अभाव दिखता है। युवा आज उद्देश्यहीनता और दिशाहीनता से ग्रस्त है, ऐसे में कोई शक नहीं कि यदि समय रहते युवा वर्ग को उचित दिशा नहीं मिली तो राष्ट्र का अहित होने एवं अव्यवस्था फैलने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। युवा व्यवहार मूलतः एक शैक्षणिक , सामाजिक, संरचनात्मक और मूल्यपरक समस्या है जिसके लिए राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक सभी कारक जिम्मेदार हैं। ऐसे में समाज के अन्य वर्गों को भी जिम्मेदारियों का अहसास होना चाहिए, सिर्फ युवाओं को दोष देने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि सवाल सिर्फ युवाशक्ति के भटकाव का नहीं वरन् अपनी संस्कृति, सभ्यता, मूल्यों, कला एवं ज्ञान की परम्पराओं को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का भी है। युवाओं को भी ध्यान देना होगा कि कहीं उनका उपयोग सिर्फ मोहरों के रूप में न किया जाय।

निदेशक डाक सेवाएं, इलाहबाद परिक्षेत्र
इलाहाबाद उत्तरप्रदेश २११००१

जंगल बचेंगे तभी हम बचेंगे

(जमुना टुड्डू नाम एक अभियान का) – ट्री सिस्टर्स

जंगल को बरबाद करने वालो, होश में आओ, होश में आओ.....जो जंगल को काटेगा, हम उसका हाथ काटेंगे.... जंगल बचेगा तभी हम बचेंगे.... के नारों के साथ जब जमुना टुड्डू और उनकी सहेलियाँ हुकार भरती हैं, तो मुतुरखम जंगल के पेड़ काटने वालों में खौफ की लहर दौड़ पड़ती है, अपने हाथों में तीरकमान, गंडासे और डंडे लेकर जमुना और उनकी वन रक्षा समिति की औरतें रोज जंगल में गश्त लगाती हैं और पेड़ों की कटाई करने वालों को पकड़ कर वन विभाग के हवाले करती हैं।

'ट्री सिस्टर' के नाम से मशहूर ३२ साल की जमुना ने जब १९९९ में अकेले ही जंगल की अवैध कटाई के खिलाफ आवाज उठाई और खुद जंगल में पेड़ लगाने की शुरूआत की तो लोगों ने पागल कहकर उनकी खिल्ली उड़ाई थी। आज आम लोग ही नहीं, वन विभाग के अफसरान भी उन्हें जंगल की बेटी, जंगल की गार्जियन, पेड़ की बहन कहते नहीं थकते हैं।

जमुना का हौंसला आसमान से भी ऊँचा है। उन्होंने १० वीं कक्षा तक की पढ़ाई की है। लेकिन जंगलों और पर्यावरण के महत्व के बारे में अच्छे खासे पढ़े लिखे लोगों से ज्यादा जानती और समझती हैं। जमुना और उसकी वन सुरक्षा समिति के कारनामे राँची से दक्षिण पूर्व में करीब ३५ किलोमीटर दूर स्थित मुतुरखम जंगल से निकल कर दूर दूर तक गूँजने लगे हैं।

१२ साल पहले जमुना ने २५ घरेलू औरतों को लेकर वन सुरक्षा समिति बनाई थी, जिसमें आज ७२ औरतें शामिल हो चुकी हैं।

जमुना की टोली में १३ साल की लड़की बहामई से लेकर ७१ साल की मालती टुड्डू जैसी औरतें तक शामिल हैं। पेड़ों को काटते पकड़े जाने पर रु. ५०१ का जुर्माना वसूला जाता है और पेड़ काटने वाले को वन विभाग के हवाले कर दिया जाता है।

जुर्माने के रूप में वसूली गई रकम को समिति के फंड में जमा कर दिया जाता है। उस रकम से पेड़ और समिति के सदस्यों के लिए हथियार खरीदे जाते हैं। इसके साथ ही तालाबों और कुँओं की सफाई और खेती के औजार भी खरीदे जाते हैं।

जंगल फिर से हराभरा

पेड़ों की लगातार कटाई से चौपट हो चुके ५० हेक्टेयर में फैले मुतुरखम जंगल को जमुना ने फिर से हराभरा बना दिया है। पिछले १२ सालों में उन्होंने और उनकी समिति के सदस्यों ने १ लाख से ज्यादा पेड़ लगाकर जंगल को फिर से जंगल का रूप दे दिया है। कटाई की वजह से २५-३० फुट की दूरी पर १ पेड़ रह गया था। अब हर ६ फुट की दूरी पर १ पेड़ लग गया है जिससे जंगल का रंगरूप और रौनक लौट आई है। गाँव के मुखिया चारू शरण कहते हैं कि समूचा जंगल और झारखंड जमुना और उनकी टोली का शुक्रगुजार है। आदिवासियों के लिए जल, जंगल और जमीन की काफी अहमियत है, इसलिए जमुना की तरह हर आदिवासी को इसके प्रति जागरूक होना पड़ेगा। जमुना की लगन और मेहनत से समूचा जंगल यूकलिप्टस, केंदु, सीसम, बबूल और बाँस के पेड़ों से भर गया है।

झारखण्ड का कुल वन क्षेत्र २३ लाख ६० हजार ५०० हेक्टेयर है। झारखण्ड के वन और पर्यावरण मंत्री कहते हैं कि अगर सूबे के हर जिले में जमुना टुड्डू जैसे जागरूक पैदा हो जाएं, तो झारखंड के जंगलों को बचाने और हराभरा बनाने के सपने को हकीकत में बदलना आसान हो जायेगा।

बीरेंद्र बरियार ज्योति

(साभार) गृहशोभा अप्रैल (द्वितीय), २०१२

समाचार

आर्यवीर शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में दिनांक २३ मई से १ जून २०१४ तक डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, सेक्टर ७, रोहिणी, दिल्ली-५५ में आर्यवीरों का विशाल 'चरित्र निर्माण एवं आत्म-रक्षा प्रशिक्षण शिविर' भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्यवीर दल दिल्ली के संचालक श्री जगवीर आर्य ने बताया कि शिविर का उद्घाटन २५ मई २०१४ और समापन १ जून २०१४ को सम्पन्न हुआ। शिविर के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए आर्यवीर दल दिल्ली के महामंत्री श्री वृहस्पति आर्य ने कहा कि संस्कृति-रक्षा, शक्ति-संचय एवं सेवा-कार्य का प्रशिक्षण व प्रेरणा इस शिविर के मुख्य उद्देश्य थे। आर्यवीर दल दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री जीतेन्द्र भाटिया के अनुसार कार्यक्रम को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य तथा दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव जी शास्त्री के आयोजन में विगत कई वर्षों से उनके पैतृक गाँव नैनोरा में 'पारायण यज्ञों' का भव्य आयोजन किया जाता रहा है। इसी कड़ी में १६ मई से २२ मई २०१४ तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. दीनानाथ शास्त्री, अमेठी, आचार्य चन्द्रदेव जी फर्रुखाबाद आदि विद्वानों ने भाग लिया।

- रामेश्वर आर्य,मंत्री, आर्य समाज,नैनोरा

वेदारम्भ संस्कार

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत के तत्वावधान में गुरुकुल का २४ वाँ वार्षिकोत्सव व वेदारम्भ संस्कार ३१ मई से २ जून २०१४ तक भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में श्री कमलेश कुमार शास्त्री व आचार्य ब्रह्मचारी ओमप्रकाश आर्य ने सुन्दरता के साथ अपने दायित्व का निर्वहन किया। इस अवसर पर आर्य जगत् के अनेक जाने माने लोग व वैदिक विद्वान् भी उपस्थित थे।

- आचार्य ओमप्रकाश

भीलवाड़ा जिले में वेद प्रचार का सघन कार्यक्रम सम्पन्न

जिले में वेद प्रचार के अंतर्गत दिनांक २० से २२ मई २०१४ तक आर्य समाज, डोहरिया का वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित सत्यपाल सरल ने भाग लिया। फूलिया कलां आर्य समाज में भी दिनांक २३ व २४ मई को सरल जी के सुन्दर उपदेश हुए। कुल मिलाकर ७ दिवस तक पंडित सत्यपाल सरल के सुन्दर भजनोपदेशों का कार्यक्रम चलता रहा जो कि बड़ा प्रेरणास्पद रहा।

- कन्हैयालाल साहू, आर्य समाज, डोहरिया

आर्य समाज, रातानाड़ा,जोधपुर का १२९ वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक १४ से १८ जून २०१४ में आर्य समाज, रातानाड़ा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी धर्मानन्द जी, आचार्य रामनारायण जी, डॉ. वेदपाल जी, पंडित रामनिवास जी व सुश्री अंजलि आर्या के प्रेरक कार्यक्रम हुए। इस अवसर पर पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद) व डॉ. सत्यपाल जी, बागपत (सांसद) भी आमंत्रित थे।

- दुर्गादास वैदिक, व्यवस्थापक

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ३ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थप्रकाश पहेली- ३** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- योगेन्द्र कुमार दीक्षित, गुमानपुरा, कोटा, पूजा पूनिया, पवनपुरी, बीकानेर, सुमीत कुमार, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, सुनीता भदौरिया, लोहामण्डी, ग्वालियर, अनुराधा, सोलन,हि.प्र., नन्दकिशोर प्रसाद, खरसावां, झारखण्ड, कुमारी गार्गी आर्या, पीलीभीत, उ.प्र., प्रेमनारायण जायसवाल, उदयपुर , अमरसिंह कच्छावा, विजयनगर, अजमेर, नरेन्द्र कुमार, झून्झुनू। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को एक वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

सत्यार्थ सौरभ की एक वर्ष की सदस्यता पूर्णतः निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त कीजिए सत्यार्थ प्रकाश पहेली समय सीमा में हल कर हमें भेजिए

प्रतियोगिता के विस्तृत नियम सत्यार्थ सौरभ जून २०१४ में देखें अथवा न्यास की वेबसाइट www.satyarthprakashnyas.org पर देखें।

- भवानीदास आर्य, प्रबन्ध सम्पादक

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, रोहतासनगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

दिनांक २५.५.१४ को आर्य समाज के निर्वाचन सम्पन्न हुए व सर्वसम्मति से प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के पद का दायित्व क्रमशः श्री रामपाल पांचाल, श्री सुखबीर सिंह त्यागी एवं श्री जगदीश चन्द्र को दिया गया।

आर्य समाज, रामनगर, रूड़की

दिनांक १८ मई २०१४ को आर्य समाज, रामनगर, रूड़की के निर्वाचन सम्पन्न हुए और सर्वसम्मति से प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के पदों का दायित्व क्रमशः श्रीमती उषा रानी, श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी व श्री जे. डी. त्यागी को सौंपा गया।

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द नगर, कोटा के निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक ४ मई २०१४ को आर्य समाज, महर्षि दयानन्द नगर, तलवण्डी, कोटा का वार्षिक निर्वाचन, चुनाव अधिकारी, आर्य समाज, जिला सभा के मंत्री श्री कैलाश बाहेती व श्री जे.एस.दुबे के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। निर्वाचन में सर्वसम्मति से श्री रघुराज सिंह कर्मावत को प्रधान, श्री भैरोलाल शर्मा को मंत्री तथा श्री शिवदयाल गुप्ता को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर की वार्षिक साधारण सभा ४ मई को

सम्पन्न हुई जिसमें समाजसेवी श्री भंवरलाल आर्य व श्रीमती ललिता मेहरा क्रमशः प्रधान व मंत्री के रूप में निर्वाचित हुए। निर्वाचन अधिकारी श्री अशोक आर्य की देखरेख में सम्पन्न चुनावों में उपप्रधान अनन्त देव शर्मा, कृष्ण कुमार सोनी, उपमंत्री संजय शांडिल्य व भूपेन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष प्रेमनारायण जायसवाल, प्रचार मंत्री रामदयाल मेहरा तथा पुस्तकालयाध्यक्ष दिनेश अग्रवाल निर्वाचित किए गए। डॉ. अमृतलाल तापड़िया, डॉ.शारदा गुप्ता, श्रीमती नूतन चौहान, श्री मुकेश पाठक अन्तरंग सदस्य चुने गए।

- रामदयाल, प्रचार मंत्री

आर्य समाज पिछोली उदयपुर के निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, पिछोली उदयपुर के वार्षिक चुनाव, चुनाव अधिकारी श्री

अरविन्द त्यागी के निर्देशन में सम्पन्न हुए जिसमें प्रधान श्री सुरेश चन्द चौहान, उप प्रधान श्री लाजपत सिंह चौहान, श्रीमती मनोरमा गुप्ता, मंत्री श्री कैलाश मौर्य व कोषाध्यक्ष

श्री यशवन्त श्रीमाली निर्वाचित हुए।

उपरोक्त सभी निर्वाचित अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रतिस्वर

किसी माध्यम से सत्यार्थ सौरभ पत्रिका प्राप्त हुई। बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है। यह वेद प्रचार में सराहनीय कदम है। श्री अशोक आर्य जी का 'भानुमति का कुनबा' बहुत रोचक लगा। कृपया हमारे विद्यालय हेतु पत्रिका भेजते रहें। सत्यार्थ प्रकाश पहेली का उत्तर भेजा जा रहा है।

प्रबन्धक- गीतांजली सी. सै. स्कूल, महेन्द्रगढ़

अनूठी अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ और उसमें 'ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिए, पुरस्कार प्राप्त करिए' की सत्यार्थ प्रकाश पहेली मन में कौतूहल उत्पन्न करने वाली, चिन्तन करने, सत्यार्थ प्रकाश से सहयोग लेने हेतु बाध्य करने वाला प्रशंसनीय उद्यम है। पर अफसोस एवं मन में हताशा होकर मन में कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है जब सही हल नहीं मिल पाता। आगामी अंक में सही हल दर्शाने, पुरस्कार प्राप्त करने वालों के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी का नहीं मिलना बंद मुट्ठी का खेल बनकर रह जाता है। बनने वाले ईश्वर के गुणवाची नामों की शृंखला धूमिल हो जाती है। लाभ क्या जानकारों को ही मिल पाये। आम पाठक सिर्फ नजरें इनायत का लाभ लेता है। अब तक कितनी प्रविष्ठियाँ कहाँ कहाँ से आईं बता सकेंगे ताकि पता चल सके कि इस प्रयास पर लोग जगे हैं या सो रहे हैं?

- सत्यदेव आर्य 'मरुत'

ध्यानयोग-यज्ञ विज्ञान शिविर सम्पन्न

मनोहर साधना स्थली उद्गीथ (राष्ट्र रक्षा स्थली) हिमाचल डोहर के आँचल में राष्ट्रीय सन्त आचार्य श्री आर्यनरेश जी के सानिध्य में उक्त शिविर २ जून से प्रारम्भ होकर एक सप्ताह तक चला। हिमालय की पावन गोद में प्रथम बार वैदिक ज्ञान, योग, ध्यान, शास्त्रीय साम-दान वेद एवं यज्ञ-विज्ञान के अनूठे संगम से युक्त युवा उपदेशकों के निर्माणार्थ यह शिविर अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ।

योग विज्ञान शिविर सम्पन्न

ऋषि मठ, सदर बाजार, चाम्पानेरी में आर्य समाज चाम्पानेरी के तत्वावधान में दिनांक ७ से ९ जून तक इस सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य मोक्षराज अजमेर थे। अन्य अनेक वैदिक विद्वानों व भजनोपदेशकों की उपस्थिति प्रेरणा का स्रोत रही।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, कविता के तत्वावधान में दिनांक ३ जून से ८ जून २०१४ तक आचार्य शिवकुमार जी के ब्रह्मत्व में व स्वामी ध्यानानन्द जी महाराज के सान्निध्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का पवित्र कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने यज्ञ के कार्यक्रम में भाग लिया।

- गोपाल आर्य, प्रधान, आर्य समाज, कविता

सत्यार्थ-पीयूष

विवाह के प्रकार

गृहस्थाश्रम का आरम्भ विवाह से होता है। विवाह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- वि+वाह। 'वि' विशेष रूप से, वाह-वहन करना। तात्पर्य यह कि विवाह उस क्रिया का नाम है जिसमें स्त्री-पुरुष गृहस्थ के उत्तरदायित्वों को विशेष रूप से वहन करते हैं। दूसरे शब्दों में "जब दो प्राणी प्रेमपूर्वक आकर्षित होकर अपने आत्मा, हृदय और शरीर को एक दूसरे को अर्पित कर देते हैं, तब हम सांसारिक भाषा में उसे विवाह कहते हैं।" गृहस्थाश्रम रूपी रथ के स्त्री और पुरुष दो पहियों के समान हैं, जिनमें पूर्ण साम्य, संगति और सद्गति का होना आवश्यक है। इसीलिए स्वामी दयानन्द ने गृह्यसूत्रों एवं मनुस्मृति के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश एवं संस्कार विधि के अन्तर्गत "विवाह प्रकरण" पर विस्तृत रूप से लिखा। स्वामी जी मनुस्मृति ३/२१ श्लोक को उद्धृत करते हुए लिखते हैं-

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः।।

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पिशाच ये आठ प्रकार के विवाह होते हैं।

इन सब विवाहों में 'ब्राह्म' विवाह सर्वोत्कृष्ट, 'दैव' और 'प्राजापत्य' मध्यम, 'आर्ष', 'आसुर' और 'गान्धर्व' निकृष्ट, 'राक्षस' अधम, और 'पैशाच' महाभ्रष्ट है। संक्षेपतः गुण-कर्म-स्वभाव, योग्यता, रुचि में समानता, युवावस्था, ब्रह्मचर्य तत्त्वों से युक्त पुरुष व स्त्री का अपनी प्रसन्नता से, प्रसिद्धि से, बिना लेन देन के जो विवाह है वही श्रेष्ठ है।

वर व कन्या की परीक्षा

स्वामी दयानन्द ने विवाह से पूर्व 'फोटोग्राफ' (प्रतिबिम्ब) एवं जन्म चरित्र का पुस्तक (इतिहास) (Biodata) वधू एवं वर के हाथ में देना आवश्यक बतलाया है जिससे दोनों का अभिप्राय विदित हो सके। स्वामी जी संस्कार विधि में 'विवाह प्रकरणम्' के अन्तर्गत लिखते हैं "अब वधू-वर एक दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव की परीक्षा इस प्रकार करें- दोनों का तुल्य शील, समान बुद्धि, समान आचार, समान रूपादि गुण, अहिंसकता, सत्य मधुरभाषण, कृतज्ञता, दयालुता, अहंकार, मत्सर, ईर्ष्या, काम, क्रोध (रहितता) निर्लोभता, देश का सुधार, विद्याग्रहण, सत्योपदेश करने में निर्भयता, उत्साह, कपट, द्यूत, चोरी, मद्य, मांसादि दोषों का त्याग, गृहकार्यों में अति चतुरता हो।" जब परीक्षोपरान्त सहमति हो जावे तो- "जब उन दोनों का निश्चय परस्पर विवाह करने का हो जाय, तब उन दोनों का समावर्त्तन एक ही समय में होवे। जो वे दोनों अध्यापकों के सामने विवाह करना चाहें तो वहाँ, नहीं तो कन्या के माता-पिता के घर विवाह होना योग्य है।"

- सत्यार्थ प्रकाश. ४ समु.

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण में एक महत्त्वपूर्ण बात लिखी है- "विवाह में बहुत धन का व्यय करना अनुचित है, क्योंकि वह धन व्यर्थ ही जाता है। इससे बहुत राज्य नष्ट हो गये और वैश्य लोगों का भी विवाह में धन व्यय से दिवाला निकल जाता है।" महर्षि के इन विचारों से शिक्षा ग्रहण कर विवाह में आजकल जो फिजूल खर्चे किये जाते हैं उन्हें रोका जा सकता है।

वैदिक (स्वर्गिक) गृहस्थ के आवश्यक तत्त्व

संतानोत्पत्तिः- गृहस्थाश्रम में जाकर स्त्री-पुरुष को 'पितृऋण' से उऋण होने के लिए परिवार, समाज व राष्ट्र को अत्युत्तम संतान प्रदान करना रहता है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में विवाह विषय के अन्तर्गत 'संतानोत्पत्यादि प्रयोजनसिद्धये' लिखकर महर्षि ने संतानोत्पत्ति को विवाह का मुख्य प्रयोजन बताया है। विवाह का सबसे ऊँचा आदर्श संतानोत्पत्ति है। सप्तपदी में भी विवाह का उद्देश्य 'प्रजा' को उत्पन्न करना माना है। इस प्रकार विवाह का मख्य उद्देश्य संतानोत्पत्ति है, किन्तु संतान के नाम पर कूड़ा-कचरा उत्पन्न करने की वैदिक सिद्धान्तानुसार सख्त मनाही है। वेद में स्त्री को 'वीर प्रसू' कहा गया है अर्थात् वीरों को उत्पन्न करने वाली। कायरों और बुजदिलों को नहीं। वेद में लिखा है- 'स्वानां वीर तमः जायताम्'- अर्थात् आने वाली संतान इतनी वीर हो जितनी पिछली संतानों में से एक भी नहीं हुई हो। इसी प्रकार एक मंत्र में वर्णन है:-

अनूनः पूर्णो जायताम् अश्लोणोऽपिशाचधीतः।

संतान 'अनून' हो अर्थात् उसमें कोई न्यूनता न हो, कमी न हो, वह सर्वथा पूर्ण हो। वह 'अपिशाचधीतः' हो अर्थात् वह पिशाच (बुरे विचारों की) संतान न हो। ऐसी श्रेणी के बालक का जन्म हो जो पिछलों की अपेक्षा वीरतम हो, अनून हो, पूर्ण हो और पैशाचिक विचारों से मुक्त हो। आज इसके विपरीत ऐसी संतानें हो रही हैं जो कायरतम हैं, न्यून हैं, अपूर्ण हैं, ऐसी संतानों से परिवार कभी स्वर्ग सुख का आनन्द नहीं पा सकता।

नीतिकार के कथनानुसारः-

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्र तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।

महात्मा तुलसी दास जी ने इसी का अनुवाद दोहे के रूप में इस प्रकार किया हैः-

कुलही प्रकाशै एकसुत, नहिं अनेक सुत निन्द।
चन्द एक सम तम हरै, नहिं उडुगण कै वृन्द।।

एक अन्य श्लोक मेंः-

एकमेव सुपुत्रेण सिंही स्विपित निर्भया
सहैव दशाभिः पुत्रै भारं वहति गर्दभी।।

अर्थात सिंहनी एक सुपुत्र होने से निडर होकर सोती है और गधी दश पुत्र होने पर भी भार ही ढोती है। मूर्ख संतान से गृहस्थी में कलह ही बढ़ती है शान्ति नहीं। क्योंकि कहा हैः-

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न च धार्मिकः।
काणेन चक्षुषा किं वा चक्षुः पीडैव केवलम्।।

वेद माँ दिव्य संतानों को उत्पन्न करने का निर्देश करती है। उपरोक्त विवरण से भी यही ध्वनित होता है कि चाहे शास्त्रकारों ने दश संतान तक उत्पन्न करने की आज्ञा दे रखी है

पर इसमें विशेष यही है कि दम्पति जितनी संतानों का इस प्रकार लालन-पालन करने में समर्थ हों कि वे दिव्य संतानों के रूप में निर्मित हो सकें उतनी ही उत्पन्न करें। महाराज श्री कृष्ण एवं देवी रुक्मिणी ने बारह वर्ष ब्रह्मचर्य की साधना कर, एकमात्र पुत्र 'प्रद्युम्न' को पैदा किया जो हर प्रकार से कृष्ण का ही प्रतिरूप था। वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि व संसाधनों की कमी को देखते हुए दो से ज्यादा संतान उत्पन्न नहीं करना चाहिए। पर इन दो के निर्माण में माता-पिता को पूर्ण क्षमता व शक्ति को लगा देना चाहिए।

वस्तुतः गृहस्थाश्रम में प्रत्येक गृहस्थ को प्रयत्न करना चाहिये जिससे उसकी संतान योग्य एवं सदाचारी संतान बने। अतः माता-पिता के संस्कार, विचार एवं आचार ऐसे होने चाहिए जो संतान को प्रभावित करें। जिन गृहस्थों की संतान शिक्षित, योग्य एवं सदाचारी होती हैं उन गृहस्थों को अपार हर्ष प्राप्त होता है। जैसे एक किसान अपने पके हुए खेतों को देखकर आनन्द-विभोर हो उठता है, उसे जिस प्रकार हर्ष की अनुभूति होती है वह उसका शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। यही स्थिति योग्य एवं सदाचारी संतान वाले गृहस्थ की होती है। इसके विपरीत जिन गृहस्थों की संतान अनाचारी होती हैं उन्हें जिस महान् क्लेश एवं दुःख की अनुभूति होती है उसे वे ही जानते हैं। उनके लिए भोजन भी विषतुल्य हो जाता है। अतः योग्य, शिक्षित एवं सदाचारी संतान के निर्माण में ही गृहस्थ की कृतकार्यता है। संतान का सुख गृहस्थ के लिए सबसे बड़ा सुख है।

वेद में कहा है कि-

''सभयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्''

अर्थात् गृहस्थ संतान सभ्य, सुशिक्षित एवं वीर होना चाहिए। इसके लिए विवाहित स्त्री पुरुष को शास्त्र नियमानुसार अत्यन्त प्रयत्नपूर्वक गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन व सीमन्तोनयन संस्कार गर्भावस्था में करने चाहिए। गर्भकाल में खान-पान, आचार-व्यवहार, के संबंध में सावधानी रखनी चाहिए। सन्तान के जन्म के पश्चात् जातकर्म संस्कार विधिवत् करना चाहिये। महर्षि जी ने इन सभी संस्कारों के बारे में, जिनसे कि जन्म लेने वाला बालक/बालिका एक आदर्श मानव के रूप में विकसित हो सके, सत्यार्थ प्रकाश में संकेत से व संस्कार विधि में विस्तार से, व्याख्या कर मानव जाति पर अतीव उपकार किया है। बालक/बालिका के नामकरण, चूड़ाकर्म, उपनयनादि संस्कार तदनुरूप अवश्य करने चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय व तृतीय समुल्लास के आधार पर संतान को सुशिक्षित व सुसंस्कारित कर, यथा समय आचार्यकुल अवश्य भेज देना चाहिए।

- संपादक- अशोक आर्य

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Bigboss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., ११/१२ गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-३१३००१ से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य